भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 37 अंक : 1	27.1.2014 सोमवार (जनवरी - फरवरी)	शुल्क – प्रति अंक : ₹ 10.00 वार्षिक : ₹ 50.00

आओ, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के 62 वें साक्षात्कार दिन को यादगार बनाएँ...

अहो! **3 फरवरी 1952...**

ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन! ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज के कहे मुताबिक विजय दिन - गुणातीत समाज की स्थापना दिन!

शैशवकाल से ही जिसके जीवन में 'असंभव' शब्द का कोई स्थान नहीं था, ऐसी शूरवीर प्रकृति के ब्रह्मस्वरूप काकाजी को गुरुहरि योगीजी महाराज ने प्रभु का साक्षात्कार करवा कर केवल अपनी प्रसन्नता ही उन पर नहीं उड़ेली, बल्कि अपनी कल्याण योजना के मुख्य सेनापति के रूप में उनका चयन भी किया। उन्होंने सात वर्ष की अल्पायु में धरती पर स्वर्ग लाने का जो निश्चय किया था, उसे साकार करने के लिए अपना सर्वस्व गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज एवं गुरुहरि योगीजी महाराज के संबंध वाले मुक्तों के लिए लुटा दिया। इससे भी अधिक, वे आज भी दिव्य रूप से, नैपथ्य में रहते हुए, अपना संबंध मौज में लुटा रहे हैं। यही कारण है कि संपर्क में आए नए मुमुक्षु, जिन्होंने ब्रह्मस्वरूप काकाजी के भले ही स्थूल दर्शन नहीं किए हों, लेकिन वे उनकी हाज़िरी सहज ही महसूस करते हैं। भजन में उनकी मूर्ति याद करके समाधान पाते हैं; और तो और... कई बार तो स्वप्न में दर्शन पाकर निहाल हो जाते हैं!

दूसरी ओर, हमने उनका स्थूल सान्निध्य पाया, पर अपनी ग़फ़लत, नासमझी या मान के वश या किसी अन्य प्रभाव में आ जाने के कारण उनका स्वरूप जैसा पहचानना चाहिए था, वैसा तत्त्व से नहीं पहचान सके।

इससे भी अधिक, जिस प्रकार ब्रह्मस्वरूप काकाजी द्वारा जोरशोर से बिगुल बजाने से पहले सभी गुरुहरि योगीजी महाराज को सिर्फ अच्छा साधु ही मानते थे, उसी प्रकार कइयों ने काकाजी की सहजता, सादगी, अपनेपन की गहराई को समझा ही नहीं। पर, आज ब्रह्मस्वरूप काकाजी द्वारा उस समय किए गए परिश्रम, उनकी बातें, उनके द्वारा दी गई सूझ, उनके द्वारा उठाई ज़हमत और उनके प्रासादिक स्थलों का दर्शन करके पछतावे से सभी की आँखें भर आती हैं कि काश! तब हम उन्हें समझ पाते। पुराने जोगियों की ऐसी बातें सुन कर सहज ही **श्री दिनकर जोशी** द्वारा लिखी पुस्तक ***'श्याम तुम एक बार मिल***

जाते...' याद आती है। जिसमें निहित सभी के संवाद ऐसा एहसास कराते हैं, मानो उन पात्रों के स्थान पर हम हैं और श्री कृष्ण के स्थान पर ब्रह्मस्वरूप काकाजी हैं। परंतु, **हमारी तो 'प्रगट' की उपासना है और वे तत्त्व से तो अब भी वैसे के वैसे ही हमारे लिए हाज़राहज़ूर हैं, सो *'जब से जागे तब से सवेरा...'*** और ब्रह्मस्वरूप काकाजी तो अकसर आशिष बरसाते – ***'जाओ, अब तक का सब माफ़...'*** और कइयों के व्यवहार में यह चेष्टा नज़र भी आती है कि तब की गई गल्तियाँ अब उन्होंने किसी तरह सुधार लीं...

इससे भी अधिक, भले ही ब्रह्मस्वरूप काकाजी स्थूल देह से हमारे बीच उपस्थित नहीं, लेकिन उन्हें सांगोपांग धारे प.पू. दिनकरभाई, प.पू. बापु, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई और ताड़देव के योगेश्वरों द्वारा आज भी उनके प्राण धबक रहे हैं। और... जो भी मुक्त उनसे जुड़े हैं – उनकी निश्रा और आश्रय में प.पू. काकाजी इन मुक्तों के चैतन्य की प्रगति करवा रहे हैं।

अब जब **2,3 फरवरी 2014 – ब्रह्मस्वरूप काकाजी के साक्षात्कार दिन** जैसे मगंल पर्व के साथ ही पवई मंदिर के प्रांगण में उन्हीं के तीन लाड़ले योगेश्वरों –

प.पू. भरतभाई – जिनके जन्मदिन को, चेतना के जौहरी, ब्रह्मस्वरूप काकाजी ने अपने चार हॅपीएस्ट डे में से एक बताया।

प.पू. वशीभाई – जिनकी 'महापूजा' में श्रीजी महाराज एवं सभी गुणातीत स्वरूप साक्षात् हाज़िर प्रतीत होते हैं और जिन्हें ब्रह्मस्वरूप काकाजी ने 'बचुड़िया' कह कर नवाज़ा

एवं

पू. अरुणभाई – *'पढ़ने जैसी तो ब्रह्मविद्या है, तुम यह पढ़ो'* – ऐसा कह कर ब्रह्मस्वरूप काकाजी ने जिन्हें आंतरिक साधुता का ध्येय स्पष्ट किया...

का हीरक प्रागट्योत्सव मनाने जा रहे हैं। तो, सभी के लिए एक अद्भुत अवसर है कि ब्रह्मस्वरूप काकाजी के साथ जाने-अनजाने में की गई अपनी त्रुटियों को सुधार कर **शिष्टाचार से नहीं, बल्कि दिल की सच्चाई से आंतरिक 'संप, सुहृद्भाव, एकता' रखते हुए,** उनके अभिप्राय की भक्ति में जुड़ जाएँ।

सच, पवई मंदिर के संकुल में प्रवेश करते ही दिव्यता का अद्भुत एहसास होता है... वज़ह यही है कि ताड़देव के योगेश्वरों ने ब्रह्मस्वरूप काकाजी को जीवंत रखा है। ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं प.पू. कांतिकाका के स्वधामगमन के पश्चात्, ब्रह्मस्वरूप काकाजी के हृदयगत अभिप्राय को समझ कर, अपनी प्रकृति से बिल्कुल विरूद्ध प्रकृति के मुक्तों का साथ लेकर, ताड़देव की व्यावहारिक एवं सत्संग के विकास की संपूर्ण जिम्मेदारी **मितभाषी प.पू. भरतभाई** ने बखूबी निभाई। वे ब्रह्मस्वरूप काकाजी की रीति-नीति के अनुसार, संख्या से अधिक प्रगट के संबंध को प्रधानता देते हुए, संपर्क में आए सभी को 'प्रगट प्रभु' के सुख से सुखी करने के मार्ग पर अग्रसर कर रहे हैं।

दूसरी ओर, **'ब्रीथ्स धॅर ए मुक्त इन योगी परिवार हु डझन्ट नो वशीभाई'** – ऐसा कोई नहीं होगा। फिर भी, प.पू. वशीभाई से यदि कोई परिचित न हों, तो जिसे देख कर –

* सभी गुणातीत सत्पुरुष पुलकित हो जाएँ,
* वडील एकांतिकों को अपने किसी सखा से मिलने जैसा हर्ष हो,
* साथीदारों को गर्व हो

और

युवकों व बालकों का हृदय नाच उठे,

तो पक्का समझना कि वे **'वशीभाई'** ही हैं।

अपनी बालक जैसी सहज निर्दोषता व निखालिस स्वभाव से, सभी के साथ स्वजन जैसी आत्मीयता से जुड़ कर, धुन-भजन के माध्यम से, सभी को प्रभु के मार्ग पर अग्रसर करने का वे उद्यम कर रहे हैं। सत्संग और जगत में बड़प्पन मिलने के बावजूद भी, उनकी जीवनशैली में लेशमात्र भी उसकी झलक महसूस नहीं होती। वे अहम्शून्य होकर, ब्रह्मस्वरूप काकाजी के संबंध वाले और लगाव वाले सभी मुक्तों की, खूब गरज व महिमा से, सभी प्रकार की चिंता-देखभाल कर रहे हैं। किसी भी अभियान का सुझाव भले उन्हीं का हो, लेकिन साथी-मुक्तों को बड़प्पन देकर, उन्हें आगे रखने में, मान देने में ही वे अपने जीवन की धन्यता मानते हैं। इसीलिए **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** ने उन्हें **'प्रभुना लाडकवाया'** (प्रभु का लाड़ला) के रूप में नवाज़ा है।

इसी प्रकार, कई सालों से अपने तन, मन, इन्द्रियों, अंतःकरण को निर्दयता से **गुलाम की भाँति** सेवायज्ञ में जोतने वाले **पू. अरुणभाई** की गुरुभक्ति बेमिसाल है। पू. अरुणभाई से पहले कितने मुक्त ब्रह्मस्वरूप काकाजी की निजी सेवा में आए, परंतु पू. अरुणभाई के आने के बाद मानो ब्रह्मस्वरूप काकाजी की सेवा के लिए सभी को निश्चिंतता हुई। यूँ उन्हें ब्रह्मस्वरूप काकाजी के अंतर की प्रसन्नता और भरोसा मिला। ब्रह्मस्वरूप काकाजी की निजी सेवा के अतिरिक्त ताड़देव मंदिर की अन्य सेवाओं में भी श्रद्धा, महिमा और श्रम से वे ऐसे जुटे कि थोड़े ही समय में ब्रह्मस्वरूप काकाजी के साथ-साथ उनके वडील साथीदार प.पू. कांतिकाका, पू. पोपटभाई, पू. गोरधनकाका एवं सभी वडील साधक भाइयों के अंतर का भरोसा प्राप्त कर लिया। ब्रह्मस्वरूप काकाजी जिन शिविरों का आयोजन करवाते, उनमें पू. रमेशभाई के नेतृत्व में, शिविरार्थियों के ठहरने की व्यवस्था से लेकर उनके भोजन इत्यादि की सभी व्यवस्था में, अपनी जिम्मेदारी से वे जुट जाते और... 1990 में पू. रमेशभाई के अक्षरधामगमन के बाद तो स्वतंत्र रूप से सारी जिम्मेदारी संभाल कर अन्य साथीदारों को एक हूँफ दे रहे हैं। इतनी सारी प्रवृत्ति-जिम्मेदारियाँ होने के बावजूद भी अंतर से बिल्कुल निर्लेप रह कर अपने निजी भजन और स्वाध्याय के प्रति भी वे खूब जागरूक हैं। साथ ही साथ, खूब विचक्षण व बुद्धिमान होने के बावजूद और सेवा-भजन में विशिष्ट होने पर भी, हर जगह उन्होंने अपने आपको छुपा कर ही रखा है और महिमा की दृष्टि से अपने साथीदारों को ही आगे रखा है...

शुरू-शुरू में **संतभगवंत प.पू. साहेबजी** कहते कि ब्रह्मस्वरूप काकाजी जो लेख या पत्र भेजते, वे तब तो समझ ही नहीं आते थे और हम उन्हें फाइल कर देते थे। पर, आज हम ब्रह्मस्वरूप काकाजी का सेवन किए इन अंतेवासी सेवकों की सर्वदेशीय जीवनशैली को गहराई से समझने का प्रयास करें, तो वे भी बहुत कुछ कह जाते हैं।

आओ, अब –

2 फरवरी – साधकों एवं गुणातीत समाज के लिए गौरव समान इन योगेश्वरों के हीरक प्राकट्योत्सव,

3 फरवरी ब्रह्मस्वरूप काकाजी के साक्षात्कार दिन और

4 फरवरी, वसंतपंचमी – श्री अक्षरपुरुषोत्तम
युगल उपासना का डंका दिगंत में फहरा कर,
भगवान स्वामिनारायण के अवतरण के
मूल उद्देश्य को उजागर करने वाले
गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की जयंती के
मंगल अवसर पर,
वर्षों पूर्व ब्रह्मस्वरूप काकाजी द्वारा लिखित
सद्विचार को समझने की कोशिश करें...

'भगवान के स्वरूप को चार वेदों द्वारा तत्त्व से पहचानना चाहिए...'
ऐसा भिन्न-भिन्न आचार्यों ने सांख्य, योग, वेदांत और पंचरात्र में बताया है।
अलग-अलग युग में, तद्-तद् ज्ञान से –
आत्मा के, अक्षर के और परब्रह्म के साक्षात्कारों के विविध अनुभव व अनुभूतियाँ भी
तत्कालीन संतों एवं भक्तों की आध्यात्मिक कक्षा के आधार पर नोट की गई हैं।
लेकिन, **मूल अक्षरब्रह्म ने 'ब्रह्मज्ञ' को – पाँचवे वेद के रूप में बताया**
और **भगवान स्वामिनारायण ने**
उसे परम एकांतिक वड़वानल जैसे सत्पुरुषों द्वारा सदैव के लिए पृथ्वी पर रखा।
यह है – **भगवान स्वामिनारायण की मानवजाति को परम बख़्शिश,**
जिसमें **मूल वृत्ति की निर्मूलता या कामना एवं अहं का विसर्जन होने पर,**
प्रारंभ में **स्वस्वरूप का साक्षात्कार सरलता से होता है**
और
आनंदमय कोष का-मुक्तभाव का- चैतन्य का- आनंद और शक्ति प्राप्त होती है।
लेकिन,
ऐसी अवस्था में महामुक्तों को भी ऐश्वर्य-प्रताप, रिद्धि-सिद्धि और प्रभुता की भ्रांति पड़ जाती है
और... वहीं पूर्णता मान कर, वे उसमें रम जाते हैं।
सो, गुणातीत दिव्यचेतना ने
'अक्षरब्रह्म' के साथ जीवात्मा का ऐक्य स्थापित करके या **साधर्म्य को पाकर**
परब्रह्म के अखंड धारक बनने की परम एकांतिकी स्थिति को
स्पष्ट किया तथा उसे **एकांतिकों द्वारा अखंडित रखा।**
वच. प्र. 27 के मुताबिक परब्रह्म का यह संपूर्ण विचार गुरुदेव **योगीजी महाराज ने** मौजरूप देकर,
ऐसे **साधकों के लिए आत्यंतिकी साधर्म्यमुक्ति का मार्ग हमेशा के लिए खुल्ला कर दिया।**
चेतना का परमचेतना के साथ मिलन ही प्रभु का सच्चा साक्षात्कार है।
जीतेजी ही ऐसी जीवनमुक्ति और विदेहमुक्ति का यह सम्मिलन,
सच्चिदानंदब्रह्म के रूप में, सर्जनात्मक कल्पना शक्ति का मूर्तस्वरूप है।
प्रभु के दिव्य गुण उपलब्ध होने पर,
ऐसे जीवन मुक्त जहाँ एक ओर जीव को ब्रह्मरूप करके, परब्रह्म में जोड़ने की प्रभु की सेवा कर रहे होते हैं,
वहीं, दूसरी ओर निर्गुण और निष्काम भावना से परे विविध निरपेक्षों के सम्मिलन के रूप से,
परब्रह्म के संपूर्ण आविर्भाव या अवताररूप में उसके अखंड धारक बन रहे होते हैं।
प्रभु का-असली नारायण का-यहाँ (उनके) रोम-रोम में सर्व प्रकार से अखंड निवास होता है।
यह है दिव्यज्ञान का-दिव्यप्रेम का-दिव्य शक्ति का-दिव्य चेतना का-प्रभु का संपूर्ण साक्षात्कार!
ऐसी ब्राह्मीस्थिति, गुरुप्रताप से, श्रेयार्थी साधकों को सरलता से प्राप्त हो –
ऐसी अतंर से स्वामिश्रीजी से प्रार्थना।

– ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज, 1972

12 अगस्त, 2013 – 'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव', पेरिस

प. भ. प्रवीणभाई लाड (पेरिस)

...गुरुहरि काकाजी और गुरुहरि पप्पाजी की शताब्दी का यह अवसर हमें मिला है; सो, हमारे भाग्य का कोई पार नहीं है। बहुत सालों पहले काकाजी यहां मिले; बाद में पप्पाजी, स्वामिजी और सभी स्वरूप आए। आज हम सब इन सभी की कृपा का दर्शन कर रहे हैं। आज इस मंगल अवसर पर हम किसका स्वागत करें और कैसे? क्योंकि – यहां गुणातीत समाज एकत्र हुआ है और गुणातीत समाज यानि गुणों से पर का समाज है। 'गुणातीतस्वरूप दर्शन' की पारायण में मेरे मुख से काकाजी और पप्पाजी ने कुछ बुलवा लिया और पूरे गुणातीत समाज ने वह सुन लिया... **गुणातीत समाज की एकता ही काकाजी और पप्पाजी का रहस्य था। संप, सुहृद्‌भाव और एकता पप्पाजी की मूर्ति हैं।** सुहृद्‌भाव जीव का जीवन है; एकांतिक का प्राण और भगवान का गुण है... **काकाजी और पप्पाजी ने बीज डालकर ये जो पौधे लगाए हैं, वे आज छोटे-छोटे से पेड़ बनने लगे हैं।** इसलिए आप सबका स्वागत करते हुए मेरा हृदय भर रहा है, मेरी आंखों में आंसू आ रहे हैं। इस समैया की शुरुआत करने के लिए सबसे पहले बकुलेशभाई के साथ स्वामिजी से मिलने गए! इस बात से स्वामिजी इतने राजी हो गए कि बोले–

गांडा, मुझे तो आना ही है न। मैं नहीं आऊंगा, तो कौन आएगा?

स्वामिजी की मर्जी और उत्साह देखकर हमें बल मिल गया...

गुरुजी और उनके मंडल की तो मैं क्या बात करूं? वे कल से यहां पर आए हैं और उनके दर्शन से हमारा हृदय आनंद से भर गया है। गुरुजी के इस मंडल को मैं गुरुजी का मंडल कहूं, तो पापी हो जाऊंगा। यह समैया जो दिख रहा है, उसमें दिल्ली मंडल का बहुत सहयोग है। गुरुजी की आयु 76 साल है; तबियत भी नादुरुस्त है। मेरी छोटी-सी विनती को मान-सम्मान देते हुए, मेरे हृदय के भाव को स्वीकारते हुए, पहली बार यहां यूरोप में वे आए हैं, तो उनका भी स्वागत है। गुरुजी का स्वागत करते-करते मेरा हृदय सच में भर आता है। दिनकरभाई और बापु सब भक्तों को लेकर, फाइनेनशियल भीड़ा उठा कर भी, सब सहन करके यहां आए हैं। उनके साथ आए डेढ़ सौ भक्तों का भी स्वागत करते हैं। फरवरी में जब दिनकरभाई से इस समैया के विषय में बात की, तब उन्होंने पहले से आशीर्वाद दे दिया– *यह समैया बहुत बढ़िया होने वाला है* और... आज उसका प्रत्यक्ष दर्शन हो रहा है। बापु तो बोलते हैं – *प्रवीणभाई, मैं आपके लिए भजन करता हूँ...* भरतभाई भी बहनों के मंडल के साथ तकरीबन 150 भक्तों को लेकर यहां पर पधारे हैं।

इन भक्तों में कुछ ऐसे गरीब मुक्त भी हैं, जो जमीन, ज़ायदाद बेच करके इस समैया में पधारे हैं। औरंगाबाद से एक फेमिली तो बैंक से लोन लेकर यहाँ आई है। ऐसे भी भक्त हैं जिन्होंने सेवा के लिए अपना घर बेच दिया है। ऐसे भक्तों की कुर्बानी से यह समैया हो रहा है। इन सभी भक्तों का हम हार्दिक स्वागत करते हैं।

जब इस समैया की बात हुई, तो पहले तो हम डर गए थे कि कैसे करेंगे। लेकिन, काकाजी और पप्पाजी के बताए हुए भजन के बल को ध्यान में रख कर हमने 1 लाख 20 हज़ार माला का संकल्प किया। इस संकल्प में पूरा गुणातीत समाज शामिल हो गया। 7 लाख माला सब भक्तों ने मिल कर कीं और **पेरिस में सभी छोटे व बड़े भक्तों ने दिल से खूब धुन की।** फलस्वरूप आज हम सब इकट्ठे हुए हैं और **एक-दूसरे के बहुत करीब आ गए हैं।** साहेब का तो क्या स्वागत करें, वे तो हमारे साक्षात प्रभु हैं। जब साहेब से बात की तो वे बोले – *समैया की पहली मिठाई हमारी ओर से।* उन्होंने **किशोरभाई जेठवा** को लंडन से यहां किचन के लिए स्पेश्यल भेज दिया। किशोरभाई भी इस उत्सव के लिए एक बार प्लेन से और 2 बार कार में सामान लेकर आए। वे **कहते हैं** कि मेरी ओर से कोई कसर नहीं रखनी है। **मुझे काकाजी और पप्पाजी की सेवा का अवसर लेना है।**

किशोरभाई मास्टर लंडन से 150 हरिभक्तों की 2 कोच लेकर आए हैं। गुणातीत ज्योत, सोखड़ा मंदिर से बहनें आई हैं। सबका हम दिल से स्वागत करते हैं।

अब हम, सभी के साथ मिलजुल कर, **काकाजी के संप, सुहृद्‌भाव और एकता के संकल्प** और **स्वामिजी के सूत्र के मुताबिक 'दास का दास बनकर' प्रभु का कार्य करें** – ऐसा आशीर्वाद हम सभी गुणातीत स्वरूपों से मांगते हैं।

आज जो कुछ भी यहां दिखाई दे रहा है, वह हमारे बापु, भरतभाई, वशीभाई सालों से हर साल जो ट्रावेल करते हैं, उसके कारण है। तब बच्चे छोटे-छोटे थे, तो सभा के अंदर सो जाते थे; लेकिन आज **उन्हीं बच्चों ने इस उत्सव की तैयारी की।** इसमें इन बच्चों का बहुत बड़ा योगदान है। तो, आज हम सभी **प्रार्थना** करते हैं **कि हम सभी भक्तों के साथ भगवान के भाव से जीएँ; काकाजी और पप्पाजी की पहचान बन जाएँ, और स्वामिजी और साहेबदादा की प्रसन्नता के पात्र बन जाएँ।** गुणातीत पुरुषों का स्वरूप अति गहन है, वह पहचानने में नहीं आता। तो हम प्रार्थना करते हैं कि **आपका स्वरूप जैसा है, वैसा पहचान में आ जाए...** यहाँ पेरिस के भी बहुत सारे भक्त इकट्ठे हुए हैं। जब हम इन्हें इनवीटेशन देने के लिए गए, तो वे बोले प्रवीणभाई आप हमें इन्वीटेशन देने के लिए आए हैं, लेकिन हम तो घर के हैं। इन्वीटेशन की क्या जरूरत है? बहुतों ने सहकार दिया, फाइनन्शियली भी, देह से भी और सेवा से भी बहुत सहकार दिया। इन सब हरिभक्तों का दिल से बहुत हार्दिक स्वागत करते हैं।

प.भ. डॉ. दिव्यांग शर्मा (दिल्ली)

...**'सुप्रीमसी ऑफ लॉर्ड स्वामिनारायण'** – वॉज एन आईडिया ऑफ काकाजी। बॅक इन धी सेवन्टीज़ काकाजी ने गुरुजी की सेवा लेकर एक बुक प्रकाशित की थी, जिसके एक चॅप्टर में भगवान स्वामिनारायण के अनपॅरेलल फिचर्स बताए थे। इंगलिश में इसलिए निकाली थी कि इंगलिश इज़ वाईड्ली यूज़्ड लँग्वेज। सो, अबकी बार गुरुजी ने सोचा कि 'सुप्रीमसी ऑफ लॉर्ड स्वामिनारायण' नाम की एक पुस्तक ही निकाली जाए...

जब मैंने शुरू के 13 पोइन्ट्स पढ़े, तब मुझे समझ आया कि ऐसा भी पॉसीबल है कि आप अपनी चीज सामने रख सकते हो और सुप्रीम बता सकते हो, विधाउट सेईंग धेट धी अधर पर्सन इज़ इनफीरीयर। इस बुक में ऐसे भी कई चैप्टर्स हैं... जैसे कि चार प्रकार के सवार या पांच प्रकार के समर्पण – जो एक न्यू कमर के लिए, एज़ वॅल एज़ हु इज़ धेर फॉर 25-30 इयर्स–उन दोनों के लिए यूज़फुल हो। यह मुझे बड़ी एस्टाउंडिंग बात लगती है।

...भारत में कई भगवान आए और जाते रहे। **सिर्फ स्वामिनारायण भगवान ही ऐसे हैं, जिन्होंने इस धरती पर लगातार एक ह्युमन फॉर्म में अपना प्रगटीकरण–अपना मॅनीफॅस्टेशन कॉन्सटन्ट एण्ड कन्टीन्यूअस रखा है।** ऐसा कोई दूसरा रिलीजियन नहीं है और उसमें भी यह समझना कि **मुझे मिले प्रगट गुणातीत संत के थ्रू मेरा कल्याण होने वाला है, उसी के थ्रू आई विल गॅट अल्टीमेट रिडम्पशन।** व्हाईल रीडिंग धी बुक ये बात इसमें से निकल कर आती है। फॉर एग्ज़ाम्पल –**आई हेव नॅवर सीन काकाजी। लेकिन, बचपन से लेकर अब तक मैंने 'काकाजी-काकाजी' सुना है। गुरुजी के मुंह से मैंने और कुछ सुना ही नहीं।** हियरींग एबाउट समवन सो मच... आप सोचेंगे ही – काश! मुझे एक बार दर्शन हो गया होता! **पर, गुरुजी के थ्रू मुझे इतना फुलफिलमेन्ट मिलता है कि मुझे कभी सोचने की जरूरत नहीं पड़ी, दिमाग़ में ख्याल ही नहीं आया– काश! काकाजी को एक बार देखा होता। काकाजी तो अक्षरपुरुषोत्तम के स्वरूप, पर उन्हें समझने के लिए आई हॅव गुरुजी इन हिज़ मॅनीफॅस्ट फॉर्म। वो ही सबसे इम्पोंटेन्ट चीज मुझे लगी।** इनीशियली ये बुक 2009 में आनंदी दीदी ने गुजराती भाषा से हिन्दी में ट्रांसलेट की थी। हिन्दी से हमें इसका इंगलिश में अनुवाद करना ऐसा लगता था कि यह तो हो ही नहीं पाएगा। इसलिए सबसे पहले तो शिकागो में अमितभाई, सुजीभाई और फाल्गुनी बहन को आउटसोर्स किया। उन्होंने पहला ड्राफ्ट बना के भेजा, तो ऐसा लगा कि इसके ऊपर से कुछ हो सकता है... फिर गुरुजी ने कहा कि राकेश अंकल, गार्गी दीदी और मैं तीन अलग-अलग वर्जन बनाएंगे... यूं गुरुजी के पास वो चार वर्जन्स जाते थे... वो सब पढ़ कर गुरुजी उनका एक फाइनल वर्ज़न बनाते थे। उसे देख कर कभी-कभी तो मुझे ऐसा लगता था, यह ऐसा बिल्कुल नहीं है जैसा हम में से किसी ने लिखा है... इस तरीके से वो धीरे-धीरे आगे बढ़ा। गुरुजी इज़ सम्बडी हु लीड्ज़ बाई एग्ज़ाम्पल। लॉट ऑफ पीपल थिंक– दिल्ली में गुरुजी हॅज़ एन आर्मी ऑफ सेवक्स। खास करके जैसे **दीदी** हैं, **वे इतना परफॅक्ट काम करती हैं कि गुरुजी को कम परिश्रम करना पड़ता होगा।**

यट् इवन एट धी एज ऑफ सेवनटी सिक्स... कई बार तो ऐसा भी हुआ है कि **गुरुजी रात के ढाई-तीन बजे तक काम करते थे...** वे कहते हैं कि इवन ड्यूरिंग धी स्लीप मेरी मोटर चालू रहती है... **जब वे सुबह उठते हैं, ही कम्स विथ न्यू आइडियाज़! यह देख कर वन कॅन गॅट इन्सपायर्ड... कई बार तो ऐसा हुआ कि मैं रात को यह सोच कर सोया कि चलो, आज गुरुजी को बहुत काम दिया है; उसे करने में दो-तीन दिन लगेंगे। पर, सुबह उठा तो देखा कि वो काम कम्पलीट हो गया! फिज़ीकली**

आई हेड नॉट सीन इट हॅपनिंग। आई वॉझ स्लीपिंग राईट बीसाईड हिम। मंदिर में ऐसा है कि गुरुजी विल स्लीप विथ अस। मुझे अचंभा होता कि यह काम गुरुजी ने किया कब ? धीस इन्सपायर्स ईच एण्ड एवरीवन एण्ड आई थिंक यही सबसे इम्पोर्टन्ट चीज है, विच पुशेज़ अस ऑल धी टाइम।

इसमें जिसने काम किया उसमें सबसे पहले तो **राकेश अंकल** का नाम आता है। अपनी लाइफ में मैंने दो मुक्तों को सबसे ज़्यादा काम करते हुए देखा है। राकेश अंकल विल टेक कॅयर ऑफ ऑल धी कॉरसपोन्डन्स ऑफ धी मंदिर, सारा का सारा पब्लिकेशन वर्क भी वो संभालेंगे। उसके बाद भजन जो बनते हैं, उसमें वो मेजर रोल प्ले करते हैं। उसके बाद जाकर ही डज़ फिज़ीकल वर्क ऑलसो। उनका 9 टु 5 जॉब तो है ही; बट बियॉन्ड धेट, एवरी वीक ही विल गो टु रद्दी सेवा... इसके बाद धी सैकण्ड पर्सन हु इज़ धेर इज़ **गार्गी दीदी**... शी वर्क्स कीपिंग कॉन्स्टन्ट निर्दोषबुद्धि–नॉट जस्ट इन स्वरूप, इन एवरबडी एल्स... इस तरीके से, बट नॉट ओन्ली गार्गी दीदी, अधर वन्स हु वर्कड हार्ड ऑन धिस बुक आर–बंसरी दीदी, आशिषभाई–हु डीड धी कवर डिज़ाइन एण्ड एवरी थिंग। लक्ष्मी भइया एण्ड विथ ऑल हिज़ एफर्ट्स वी हॅव कम आउट विथ धिस बुक... तो, दिनकर अंकल से प्रार्थना कि इस बुक का उद्घाटन करें।

प.पू. साहेबजी (मोगरी)

...काकाजी के साथ 73 में मैं फर्स्ट टाइम पेरिस आया था... मुझे याद है कि फिर प्रवीणभाई के पुराने घर पर काकाजी आते रहते थे। वह घर देखने लायक था। एक रूम का घर होगा। किचन वगैरह सभी कुछ उसमें ही था। मुझे यह सब देख कर बहुत सरप्राइज़ हुआ। इन दिव्य पुरुषों को किसी घर, व्यवस्था के प्रति कुछ लगाव नहीं; उनका लगाव तो चैतन्य के प्रति है। प्रवीणभाई और उनकी वाइफ दोनों पूर्व जन्म की बहुत बड़ी आत्मा होंगी। पूर्व जन्म का संबंध जाग्रत करके, उनका सिंचन करने के लिए, भक्तिमार्ग पर चलाने के लिए काकाजी उनके साथ रहते थे। उनके पास कोई सुविधा नहीं थी, कार भी नहीं थी। लेकिन, हम देखते हैं कि **काकाजी के प्रेम और सिंचन से प्रवीणभाई के साथ कई सत्संगी इकट्ठे हो गए और यहाँ बड़ा सत्संग समाज बन गया। भरतभाई, बापू, दिनकरभाई** आते रहते हैं। उन**के संबंध और योग से पेरिस के सत्संगी माहात्म्ययुक्त बने।**

यह फंक्शन पैसे या मास से नहीं बन सकता है। अपने गुरु के प्रति, अपने इष्टदेव को भीतर से राजी करके जो भाव प्रगटता है, उसी भाव के बल से इतना बड़ा साहस किया। जैसे–रामचन्द्रजी की आज्ञा से हनुमानजी सीताजी की खोज में निकल पड़े थे। लंका के बीच में समुद्र आया, तो वे सोचने लगे कि कैसे पार होगा! भीतर से आवाज़ आई–जब तू छोटा था, तब चांद को लेने के लिए छलांग लगाई थी। अब तो रामचन्द्रजी के रूप में तुझे प्रभु मिल गए और उनकी आज्ञा से तू निकला है, तो लगा छलांग! और... उन्होंने छलांग लगा कर समुद्र पार कर लिया। हम सोच भी नहीं सकते, ऐसा काम हुआ। ऐसा कोई नहीं कर पाता है।

भीतर से प्रभु के प्रति श्रद्धा, प्रभु को राजी करने का भाव और प्रभु की आज्ञा पालने की उत्कंठा होती है, तभी अकल्पनीय शक्ति प्रगटती है। ऐसी छलांग पेरिस मंडल ने लगाई। प्रवीणभाई, आप लोगों को सच बहुत - बहुत धन्यवाद! अभिनंदन! फ्रांस यानि (नखरे वाला) वरणागियो देश कहलाता है, ऐसे पेरिस में सबको सभी का दर्शन करने का मौका दिया। सचमुच आपकी भक्ति को वंदन है। एक साथ सबका दर्शन करने में बहुत आनंद आया। **ये सब लोग कोई पेरिस देखने के लिए नहीं आए हैं। ऐफिल टावर के पास जाने के लिए नहीं आए हैं। सत्संग की भक्ति अदा करने के लिए आए हैं।**

काकाजी और पप्पाजी ने खूब परिश्रम किया है। स्वामिनारायण भगवान अपने मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी के साथ इस ब्रह्मांड में आए। क्यों आए थे? हम भक्त लोगों के लिए ही! हम सबको सुख देने के लिए प्रभु खुद अपने अक्षरधाम सहित पृथ्वी पर पधारे हैं। जब से वानर में से मानव का इवोल्यूशन हुआ, तब से उसने सुख, शांति, आनंद की खोज के लिए दौड़ लगाई। हम देखते हैं सायन्स, टेक्नोलॉजी ने कितनी सुविधा खड़ी की है। हम सोच भी नहीं सकते कि किस प्रकार एलनटाउन मंदिर व अपने सभी केन्द्रों में सब इकट्ठे होकर इस कार्यक्रम का दर्शन कर रहे हैं। सब सायन्स - टेक्नोलॉजी का फल है।

...आदमी ने सुख-शांति के लिए खोज की, लेकिन भीतर से वो वहीं का वहीं है। शांति और आनंद की खोज में अभी वो एक फुट भी आगे नहीं है। योगीबापा एक दृष्टांत देते थे – एक गांव में आदमी था। उसकी हरकतें ऐसी थी, जिन्हें देख कर सब उसे पागल-मूर्ख कहते थे और उसका नाम 'मूर्ख' पड़ गया। वह सोचने लगा कि इस पूरे गांव में सबको मेरी जरूरत पड़ती है, फिर भी लोग मुझे मूर्ख कहते हैं। अच्छा हो कि मैं गांव ही छोड़ दूँ। वह 2-3 माईल दूर पैदल चल कर दूसरे गांव पहुंचा। वहाँ उसे प्यास लगी। गांव के बाहर कुंए पर स्त्रियाँ पानी भर रही थीं। उनके पास जाकर वह बोला – मुझे प्यास लगी है, पानी दोगे? उन्होंने कहा – पानी मुफ़्त में मिलता है; क्यों नहीं देंगे? लेकिन हमारे पास कोई प्याला या लोटा नहीं, सिर्फ घड़ा है। उन्होंने उससे हाथ से कटोरी (ओक) बनाने के लिए कहा; उसने ओक बनाने के बजाय, हाथ बाहर की तरफ उल्टे कर दिए। यह देख कर स्त्रियों ने आपस में कहा – *यह मूर्ख लगता है।* यह सुन कर उसे अचरज हुआ और सोचने लगा कि क्या वे गांव वाले इन्हें भी कह गए हैं कि मैं मूर्ख हूँ। सो, वह वहाँ से भी चला गया। **योगीजी महाराज ने बताया कि उसे गांव बदलने की जरूरत नहीं थी; भीतर से बदलाव लाने की जरूरत थी। वह अपनी मूर्खताभरी हरकतें - एक्शन चेईन्ज करता तो सयाना ही था। हम सुख के लिए दौड़ते हैं, लेकिन भीतर से बदलाव लाना है।** बदलाव क्या? **अंहकार, मेरापन (मैं), बुद्धि, शक्ति, धन, ऐश्वर्य सब निकल जाए और सोचें कि मैं जो कुछ हूँ, अपने प्रभु से ही हूँ।** हनुमानजी का दासत्वभाव बोलता था। एक बंदर भगवान बन गए। इतने शक्तिमान कि एक पूंछ से पूरी लंका को जला दिया! कितनी ताक़त होगी? लेकिन वे केवल प्रभु का बल लेकर, प्रभु का दास होकर रहे कि मेरी कोई शक्ति नहीं, मेरे प्रभु की शक्ति है। मेरा बल, मेरे प्रभु का दिया हुआ है। अपना अस्तित्व था ही नहीं। प्रभु में विसर्जित होकर भगवान बन गए। सुख, शांति, आनंद के भोक्ता और देने वाले भी बन गए।

स्वामिनारायण भगवान ने मूल अक्षरमूर्ति गुणातीत को अपने साथ लाकर बताया कि ऐसे साधु के रूप में मैं प्रगट रहूंगा और यह पूरी बात शास्त्रीजी महाराज व योगीजी महाराज को अक्षरपुरुषोत्तम उपासना के द्वारा जन-जन तक पहुंचानी थी; लेकिन हम लोग अपने आप में इतना रहते हैं कि संत–गुरु जो बात करते हैं, उसे पकड़ते ही नहीं हैं। **शास्त्रीजी महाराज ने वड़ताल-मूल संस्था को छोड़ दिया। छोड़नी नहीं थी, लेकिन हम सबको सुख देने के लिए एक तरीका-एक रास्ता अपनाया था।** पर, किसी के पास शास्त्रीजी महाराज की बात सुनने का टाइम ही नहीं था।

एक बार शास्त्रीजी महाराज बीमार हो गए थे। दो दिन बाद 12-15 भक्त स्वामिजी के दर्शन करने के लिए उनके पास जाकर बैठे। उन्हें 103 डिग्री टेम्परेचर था। लेकिन, भक्तों के आते ही शास्त्रीजी महाराज तुरंत बैठ गए और 3 घंटे लगातार अक्षरपुरुषोत्तम उपासना की बातें की। फिर टेम्परेचर देखा तो नॉर्मल हो गया; बुखार था ही नहीं! सबने कहा–स्वामिजी आपने बुखार ग्रहण किया और छोड़ भी दिया, कृपा की। उन्होंने कहा–

अरे! आप लोगों को मेरी बात सुनने का टाइम नहीं है, तो बुखार ही चढ़ेगा ना। *जो बात करने के लिए मैं निकला हूँ, वो बात तुम लोग समझो।*

शास्त्रीजी महाराज की बात हम सब तक पहुंचे, इसलिए योगीजी महाराज ने बहुत परिश्रम किया। **1952 में दादुकाका को साक्षात्कार करवाया।**

योगीजी महाराज सबको पसंद थे। योगीजी महाराज के प्रति सबको लगाव था, क्योंकि वे सबको प्रेम करते थे। सबकी बात सुनते, सबकी सेवा करते, वह किसे न जमें! किसी मंदिर में जाओ, वहाँ कोई साधु हमारी सेवा करे, बात सुने, हमारे साथ घूमे, तो किसे न जँचे। ऐसा साधु सभी ढूँढते हैं। इस तरह योगीजी महाराज के प्रति सबको लगाव था। लेकिन, दादुकाका को योगीजी महाराज ने कृपा करके साक्षात्कार करवाया। क्या साक्षात्कार करवाया?

सबने काकाजी से पूछा– *आपने समाधि में क्या देखा?*

तब काकाजी ने उपासना का बहुत बड़ा रहस्य अनफोल्ड किया।

काकाजी बोले– *समाधि के दौरान जब मैं अक्षरधाम में पहुँचा, तो वहाँ के तख़्त पर योगीजी महाराज विराजमान थे!*

सब सुनने वालों को सरप्राइज़ हुआ– *अक्षरधाम में योगीजी महाराज? योगीजी महाराज तो यहाँ हैं। अक्षरधाम में तो स्वामिनारायण भगवान विराजमान होने चाहिएँ, वहाँ योगीजी महाराज कैसे?*

हमें **इस बात को समझने के लिए संत का योग चाहिए।**

काकाजी ने उसका एक्सप्लनेशन दिया– *सहजानंदस्वामी - अक्षरधाम के अधिपति पुरुषोत्तम नारायण - ने मुझे बताया कि योगीजी महाराज के रूप में मैं तुम्हें प्रगट मिला हूँ। लोग जिसे अक्षरधाम बोलते हैं, मैं वहीं हूँ। मेरा स्थान, मेरा निवास स्थान– 'अक्षरधाम'!*

अक्षरधाम मीन्स गुणातीतभाव को पाए हुए साधु। उनमें मैं अखंड हूँ। योगीजी महाराज अक्षरधाम हैं, उनके द्वारा मैं प्रगट हूँ।

यह दर्शन करके **दादुकाका ने ज़ोर-शोर से बिगुल बजाया** – *योगीजी महाराज हमारी सेवा करते हैं, हमें अपना मानते हैं, हम से हेत करते हैं, तभी हम उनके पास जाते हैं।* ***पर, करोड़ जन्म तक करोड़ दान, करोड़ यज्ञ करने से जिन दिव्य विभूति की प्राप्ति करनी है, जिनके आश्रय से, जिनसे जुड़ने से आत्मा का कल्याण हो, वही दिव्य विभूति योगीजी महाराज हैं। साक्षात् अक्षरपुरुषोत्तम का स्वरूप मूर्तिमान यही हैं।***

यह बात जब दादुकाका ने की, तो पूरे सत्संग में हलचल मच गई।

सब बोले – *क्या नई बात कह रहे हो ?*

दादुकाका ने 1952 की 3 फरवरी के बाद अक्षरपुरुषोत्तम का यह रहस्य अनफोल्ड किया, जिसके लिए शास्त्रीजी महाराज ने बोचासणवासी अक्षरपुरुषोत्तम बॅप्स संस्था का स्थापन किया। 41 साल की आयु में शास्त्रीजी महाराज वड़ताल से निकले। 85 साल की आयु में उन्होंने देह छोड़ दिया। यह बात सुनाने के लिए 44 साल तक घूमते रहे और फिर 1951 में जब शास्त्रीजी महाराज ने देह छोड़ दिया और... योगीजी महाराज बॅप्स संस्था के गुरु स्थान पर आए! **3 फरवरी 1952** को दादुकाका को साक्षात्कार कराया। **उस समय से अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना का झंडा लहराने लगा और गुणातीत समाज की स्थापना हुई।** हम सब लिविंग हैं और हम लाइव बन गए। क्यों बन गए ? **जिसे प्रगट भगवान की प्राप्ति होती है, जिसे प्रगट भगवान के साथ लगाव होता है, जो प्रगट भगवान की आज्ञा में रहने के लिए भीतर से बहुत उत्सुक है, उसका जीवन 'जीवंत' बन जाता है ! जिस प्रकार दादुकाका ने आकर अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना को जो अन्फोल्ड किया, जो लाइवलीनेस दी, उससे पूरी बोचासण संस्था की रौनक बदल गई** और यह बात बताने के लिए योगीजी महाराज ने युवाओं को इकट्ठा किया, उन्हें प्रेम दिया।

बापा के प्रेम से हम सब सत्संग में आए थे। उनके प्रेम से ही सेवा करते थे। उनके प्रेम से ही काम करते थे। **काकाजी ने माहात्म्य बताया कि योगीजी महाराज के द्वारा स्वामिनारायण भगवान प्रगट हैं।** हरिप्रसादस्वामी ने भी माहात्म्य गाकर सिंचन किया, लेकिन **जब बापा की आज्ञा से काकाजी 2 साल हमारे साथ रहे, तो उनकी बातों से मुझ में और अश्विनभाई, रतिभाई, शांतिभाई आदि सब युवाओं के भीतर 'समर्पण' का भाव प्रगट हुआ और हमें एहसास हुआ कि यह जीवन योगीजी महाराज के लिए ही जीना है। यह भाव भीतर से प्रगटाने के लिए काकाजी खुद समर्पित हो गए थे, बापा रूप हो गए थे।** योगीजी महाराज की बात करते हुए कभी काकाजी पानी लाने के लिए कहते और सेवक पानी लेने जाता, उसी दौरान यदि योगीबापा की बात निकलती, तो 1 घंटा कब निकल जाता था, यह पता ही नहीं चलता और सेवक पानी लेकर खड़ा रहता। **काकाजी को अपने गुरु और इष्टदेव के प्रति इतना लगाव था कि जब उनका गुणगान करते, तो कौन सामने है यह भी नहीं देखते थे। व्यक्ति समझता हो या नहीं समझता हो, वे कुछ नहीं सोचते थे। एक हो, दो हो, पांच हो, दस हो, 100 हो या लाख हो, सबके साथ बात करते। प्रभु की-गुरु की बात आती, तो लयलीन हो जाते थे।**

विद्यानगर में मैं, शांतिभाई, रतिभाई वगैरह रहते थे। उस समय मैं पी.एच.डी. के लिए रिसर्च कर रहा था, इसलिए 8 बजे डिपार्टमेंट में जाना पड़ता था। तो हम सब निकल जाते; अश्विनभाई फ्री थे। अश्विनभाई काकाजी की सेवा में थे। एक बार दोनों रुम में बैठे थे। 12 बजे हम लौटे, तो हमने देखा काकाजी और अश्विनभाई 4 घंटे के बाद भी वहीं बैठे थे!

हमने अश्विनभाई से पूछा – *आप लोग दोबारा कितने बजे बैठे थे?*

उन्होंने बताया – *आप गए तब से उठे ही नहीं, यहीं बैठे हैं।*

सिर्फ एक अश्विनभाई और काकाजी! उनकी जगह हम हों, तो कहेंगे कि अभी तू जा। एक, दो या तीन – उनके लिए कोई फर्क नहीं था। बस अपने गुरु और इष्टदेव! **साधक यदि काकाजी से यदि पूछे कि योगीजी महाराज को कैसे राजी करें, तो वे खूब खुश हो जाते।** यूँ जब अश्विनभाई ने काकाजी से पूछा, तो 4 घंटे तक बातें की। यूँ अजोड़ गुरुभक्ति का दर्शन कराया; इष्टदेव के प्रति परम श्रद्धा का दर्शन करवाया! **उनकी बातों से ही पूरा 'गुणातीत समाज' बना।** फिर पप्पाजी-स्वामिजी साथ में थे। कितना अद्‌भुत समाज तैयार हो गया है! **भक्ति अदा करते हुए काकाजी - पप्पाजी दोनों ने हम सबके लिए अक्षरधाम रुप होने का अद्‌भुत मार्ग दिया।** सायन्स, टेक्नोलॉजी कितनी बदल गई है?

...सायन्स टॅक्नोलॉजी ने जीवन में सरलता ला दी है। तो क्या स्पीरीच्युअल सायन्स में कोई सरलता नहीं? वही का वही रवैया? दो सौ साल पहले जो करते थे वही का वही? **हमारा जीवन सुख से बीते, सुख-शांति और आनंद से हम प्रभु की साधना करें, इसलिए इन दिव्य पुरुषों ने मानव देह धारण करके खूब परिश्रम उठाया है।**

फ्रांस के भक्त प्रवीणभाई के साथ जुड़े पूरे मंडल को प्रभु की साधना करने में, प्रभु का होकर सुख-शांति और आनंद प्राप्त करने की ताक़त मिले, इसलिए काकाजी खुद सबके साथ रहे। हमने जो दिया, वो उन्होंने लिया। खुद की कोई मांग-कोई इच्छा नहीं। कहीं जाना-करना ऐसा कुछ नहीं। बस, तुम भगवान के होकर जीवन जिओ। भगवान की भक्ति करो। **इकट्‌ठे होकर भगवान का कार्य करने के लिए तैयार होओ, यही उनकी गुरुभक्ति थी।**

हम सब मिलकर जो कर रहे हैं, उन सब भक्तों पर काकाजी और पप्पाजी की अनहद् कृपा हुई है, तभी संभव हुआ है। सच में खूब आनंद हुआ। पेरिस जैसे नगर में ऐसा अद्‌भुत उत्सव मना रहे हो।

हम पर भगवान, गुणातीत, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी खूब-खूब राजी होंगे। एक अनोखा आनंद महसूस हो रहा है। जिस-जिसने उत्सव में सेवा की, साथ-हाज़िरी दी, सबका भाव-भक्ति प्रभु स्वीकार करके सभी को तन, मन, धन और आत्मा से सुखी रखें–ऐसी प्रार्थना। शांतिभाई की तबियत अच्छी नहीं थी, फिर भी उन्होंने कहा कि मुझे तो जाना ही है। अमेरिका से कल आए और आज आप सबके दर्शन करने का मौका मिला है। सच में खूब आनंद हुआ। फिर से पेरिस मंडल के सभी भाइयों - बहनों का अभिनंदन! जय स्वामिनारायण।

13 अगस्त, 2013 – 'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' सुबह की सभा, पेरिस

प.पू. भरतभाई

...आज वशीभाई, राजूभाई और यज्ञप्रियस्वामी सभी ने मिल कर बहुत ही अच्छी महापूजा संपन्न की। सबको प्रार्थना के अहोभाव में रख दिया... कोई छोटे से छोटा फंक्शन हो, तो भी काकाजी की यही भावना रहती है कि हम सभी इकट्‌ठे हों। गुरुजी भी इस विषय में बहुत बार बताते हैं कि दिल्ली में पहली बार 1975 में एक शिविर रखी गई थी। मुंबई से करीब 50-60 हरिभक्त आए थे। तब दिल्ली का समाज छोटा था और मुंबई से आए हरिभक्त ही ज़्यादा थे। जब वे सभी 'दिल्ली दर्शन' करने के लिए जाने लगे, तो गुरुजी ने उनसे कहा कि वे शाम को 5.00 बजे तक अवश्य लौट आएँ। सब बोले – आप इतनी चिंता क्यों करते हो? गुरुजी बोले – 5.00 बजे तक आप लोग नहीं आओगे, तो सभा में होगा कौन? ऐसी ही परिस्थिति पेरिस मंडल की है। पेरिस मंडल का इतना छोटा-सा समाज, लेकिन उन्होंने जो बीड़ा उठाया-साहस किया, उसके लिए मैं सभी भक्तों को धन्यवाद देता हूँ।

काकाजी यहां 1983, 84, 85 तीन साल पधारे और टोटल करीब 15 दिन ही रहे होंगे - टोटल तीन साल में गिन कर। पर, आज हमें बहुत-बहुत आनंद होता है और सबसे बड़ा आनंद यही है कि काकाजी - पप्पाजी की हम शताब्दी मना रहे हैं। इसके पीछे एक भावना है! काकाजी बोलते कि कोई भी काम अकेले हाथ से नहीं होता है। सभी मिल कर करते हैं, तभी वो काम होता है। कोई भी ऐसा नहीं कह सकता है कि यह काम मैंने किया है; सभी ने मिल कर किया तभी हुआ है। यहां जो भी डेकोरेशन व कार्यक्रम देख रहे हैं, वह सब दिल्ली, मुंबई, अमेरिका, लंडन के सभी भक्तों के सहकार से ही संभव हुआ है। यह सबके साझे प्रयास से हुआ है और जब ऐसे सुहृद्‌भाव से किया जाता है, **सभी अपनापन छोड़ कर सुहृद्‌भाव से कार्य करते हैं, तो काकाजी के अनुसार मूसल में से संगीत निकलने लगता है; असंभव काम संभव होता है।** तो ये जो इधर माहौल देख रहे हैं, मुझे तो ऐसा भी लगता है कि मुंबई में जो मैत्रीमिलन महोत्सव हुआ था, यह उससे भी बढ़िया है। मूसल में से संगीत निकलना – वो यह काम है। इसमें इतने चमत्कार हुए हैं कि उनका वर्णन भी नहीं किया जा सकता। बस, ऐसे चमत्कारों के लिए हम धन्यवाद देते रहें कि हे प्रभु! हे काकाजी! आपने हम पर कितना अनुग्रह किया है! शाम को ड्रामा होना है। वह जब लिखा गया, तो सबने विचार किया कि इसका नाम क्या रखा जाए। फिर रखा **'दिव्य अनुग्रह पायो'**।

'दिव्य अनुग्रह पायो' एक रहस्य है। गुरुजी ने अनुग्रह के बारे में बताया था। दिनकरभाई ने भी बताया था। हमने और घनश्यामभाई ने डेकोरेशन के तौर पर डिसाइड किया था कि यहां एक रथ बनाएँगे, जिसमें काकाजी और पप्पाजी की मूर्ति को बिठाएँगे। हमने भजन बनाने वाले से यह नहीं कहा था कि वह भजन में 'दिव्य अनुग्रह' शब्दों का प्रयोग करे। लेकिन, रचियता ने भजन में 'दिव्य अनुग्रह रथ' शब्द लिखा। तो,

अनुग्रह का ऐसा रथ है, जो सबके ऊपर अनुग्रह बरसा रहा है। ऐसा हम आज महसूस कर रहे हैं। महापूजा में तो खास महसूस किया कि ऐसा अनुग्रह सबके ऊपर बरस रहा है। ऐसे जो **गुणातीत पुरुष** हैं, वे **हमारे जीवन में आए और उनकी प्राप्ति हुई यही हमारी सबसे बड़ी प्राप्ति है और इसके लिए हम स्वयं को बहुत-बहुत भाग्यशाली मानते हैं।** काकाजी तो हमेशा कहते थे कि शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज हमें मिल गए, तो हमें सब कुछ मिल गया। वर्ना तो **हम अनाथ थे, सनाथ तो शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज ने बनाया है।** काकाजी यह कहना चाहते हैं कि हम आपको मिले हैं, तो आप सब अनुग्रहीत हो गए हैं। यह अनुग्रह काकाजी हमेशा सबके ऊपर, कोई चाहे या न चाहे, बरसाते रहते थे। तो आज हम सिर्फ यही प्रार्थना करते हैं – हे काकाजी ! आप तो हमेशा बरसते ही रहते हो ; हे पप्पाजी ! आप हमेशा बरसते रहते हो, मगर हम वो झेल लें। कल जैसे साहेबजी ने बताया – यूँ हाथ उल्टे करके हम मूर्ख न बने रहें...

ऐसे गुणातीत संत को हमें अपने जीवन में स्थान देना ही है। **जब भी प्रसंग बनें, कुछ भी प्रॉब्लॅम हो - मुश्किलें आए, तब इन पुरुषों का साथ - सत्संग यदि होगा, तो हमारी बड़ी से बड़ी प्रॉब्लॅम - मुश्किल भी इज़ीली हल हो जाएगी और हमें बहुत-बहुत आनंद प्राप्त होगा। मुश्किल, मुश्किल नहीं रहेगी।** हमने देखा है कि काकाजी के पास कई समस्याएँ लेकर सब आते। एक बार काकाजी पांव में मोजड़ी पहन कर ताड़देव से बस निकल ही रहे थे कि इतने में एक बहनजी रोती हुई आईं। मोजड़ी निकाल कर काकाजी सभा हॉल में बैठ गए और धुन करवाई ! फिर... बाद में काकाजी जब वहाँ से निकले, तो वो बहन हंस रही थीं। कहने का मतलब यह है कि हम ऐसे गुणातीत स्वरुपों के संबंध में हैं, यह हमारा बहुत बड़ा भाग्य है...

एक ई-मेल पढ़ा था, जिसमें लिखा था कि जिसके साथ हम जुड़े हैं, वहां इतना ही करें कि दो हाथ जोड़कर जैसा वे कहें, हम वैसा करें। शास्त्रीजी महाराज के पास मोरारजी देसाई गए थे। उन्होंने पूछा था कि सत्संग क्या ? शास्त्रीजी महाराज ने बताया कि दो हाथ जोड़ कर वे जैसा कहें वैसा करें। तो वे बोले कि दो हाथ जोड़े, यह तो हो सकता है, मगर वे जो कहें वैसा करना मुश्किल है। तो हम अपनी बुद्धि, अपनापन वगैरह सब कुछ छोड़कर उनकी शरण में रहें, यह खास प्रार्थना करनी है। काकाजी की भावना हमेशा यही रहती थी। जब हम काकाजी के पास बैठते थे, तो काकाजी यही पूछते थे –

आपका मनुष्यभाव और मायिकभाव कितना टला है ?

आपका स्त्री-पुरुषभाव कितना टला है ?

अखंड भगवान में रहते हुए आप कितने हुए हो ?

यह करना है और यह हम कर पाएँ, ऐसा संकल्प करने के लिए यह शताब्दी महोत्सव मनाना है और ऐसा जीवन जीने की शुरुआत करनी है, हर पल ऐसा जीवन जीना है... तो आज के दिन सच्चे दिल से प्रार्थना करते हैं कि हम सब मिलजुल कर सुहृद्‌भाव - एकत्रभाव से वैसा जीवन जिएं, जैसी सभी स्वरूपों के अंतर की इच्छा है...

प.पू. निर्मलस्वामिजी

...आज हमारी इस सभा में स्वामिनारायण के एक ख़ज़ाने का दर्शन हो रहा है... यह अक्षरधाम की सभा है। यह जो हॉल है, वो कोई लोहे या लकड़ी का नहीं; ये हॉल आध्यात्मिकता का हॉल है... जैसे माँ अपने बालक की चिंता करती है, वैसी ही चिंता इन गुणातीत पुरुषों ने मेरी और आपकी ली है... **जहाँ से लाभ मिले, जहाँ से सुख मिले, जहाँ से भगवान की प्राप्ति हो, वहाँ हमें चिपके रहना है।**

इतना अच्छा समैया किया। तो किसी अतिरेक में जाना नहीं... **ये पुरुष ऐसे अद्भुत हैं कि मैं और आप उन्हें पहचान नहीं सकते... उनका भगवान के साथ संबंध है और भगवान के भाव से ही हमें उनसे जुड़ना है।** काकाजी को जब समाधि हुई, तब मैं साथ में ही खड़ा था... **योगीजी महाराज** ने कहा था– ***ये दादुभाई, वो दादुभाई नहीं हैं। दादुभाई का जो चित्त है, वह स्वामिनारायण भगवान में जुड़ गया है। अब वे दादुभाई नहीं, स्वयं भगवान का स्वरूप बन गए हैं।***

मुझे आपसे आज एक ही बात कहनी है कि अक्षरधाम में जो स्वामिनारायण की मूर्ति है, हमारे मंदिर के सिंहासन में जो मूर्ति है और यहाँ जो प्रगट सत्पुरुष - गुणातीत स्वरूप बैठे हैं, इन तीनों में कोई भेद नहीं है। ये तीनों 'तत्त्व से' एक ही हैं... यह बात काकाजी ने हमें समझाई थी। तो, मुझे आपसे यही कहना है–
आध्यात्मिकता के क़ैफ में रहना, स्वरूपनिष्ठा के क़ैफ में रहना, सेवा-भक्ति के क़ैफ में रहना।
पर, उसे पचाना भी पड़ता है। क़ैफ-निष्ठा में कूदा-कूदी नहीं की जाती...

મૂળ ગુજરાતી :

પ.પૂ. ગુરૂજી

હું અહીં પેરિસ આવ્યો, ત્યારથી એક જ વાત મારા મગજમાં ફર્યા કરે છે કે આ પ્રવીણભાઈએ ભારે હિંમત કરી કહેવાય. આપણો એવો કોઈ સમાજ નહીં, પૈસા-પાત્ર એવા મુક્તો પણ નહીં, છતાંય બીડુ ઝડપી લીધું. જ્યારે નાના હતાં ત્યારે એક કહેવત જેવું સાંભળેલું, બોલતા પણ ખરા – *'હિંમતે મર્દા તો મદદે ખુદા'*; એ અહીં સાકાર થયેલું દેખાય. એમણે ખાલી હિંમત દાખવી એવું નથી, ખુદા પણ એમ ને એમ તો મદદ કરતા જ નથી. તમે માંગો તો મળે અને માંગવાની ય રીત છે – 'ભજનની'. મેં તો એમની વાત સાંભળી ને મને એકદમ કાકા સાંભર્યા. છેલ્લા બે મહિનાથી, આ બધાએ રોજ સવાર સાંજ એક-એક કલાક ધૂન કરી. એક તો શૉર્ટેજ ઑફ મૅન પાવર, શૉર્ટેજ ઑફ ટાઇમ ઑલ્સો. એમાં ભજન કરવું. આપણે તો કાંઈ થોડુ ઘણું કામ આવે, તો સીધો કાપ ભજન ઉપર પડી જાય. વ્યક્તિગત પ્રવૃત્તિમાં બી કંઈ આપણે ગૂંચવાઈ જઈએ, તો બીજું બધું વ્યવસ્થિત કરીશું; હું આ વાત ઘણીવાર કરું છું – આપણે ચા વ્યવસ્થિત પી લઈશું, એમ નહીં કે અડધો કપ પીઈએ. શેવિંગ પણ બરોબર થઈ જશે, પણ માળા ફેરવવાનું આવશે ત્યારે અત્યારે એક માળા ફેરવી લઉં, પછી સાંજે આવીને બાકીની ફેરવીશ. કાપ એકદમ ભજનમાં જ પડી જશે; કેમકે ઠાકોરજી કંઈ બોલતા નથી અને દયાળુ છે. પણ, કાકાની હીરક જયંતી આપણે ૭૮માં ઉજવેલી એના અમે

બધાં તો સાક્ષી છીએ. કેટલી બધી પ્રવૃત્તિ! એક બાજુ એમનું રીયલ એસેન્સ ઑફ તન્ત્ર ચાલે. કાકાની એક રીત કેવી કે – જે સાધન મળ્યું એનાથી જ કામ ચલાવીને બધું પાર ઉતારે. મને હજી એ બધું રીયલ એસેન્સ ઑફ તન્ત્રનું યાદ છે. મને બોલાવેલો, પહેલે દિવસે ફાઈલ આપી કે આ બધું તૈયાર થઈ ગયું છે, હવે તું જોઈ લે એટલે આપણે પ્રેસમાં આપી આવીએ. કાકા તો પછી પોઢી ગયા. મને એમ કે હું સૂઈ જાઉં એ પહેલાં આ ફાઈલ જોઈ તો લઉં. મેં ફાઈલ ખોલી તો સુન મારી ગયો કે આ પ્રેસમાં આપવાની છે? આમાં તો કંઈ સમજ જ પડતી નથી. ચૅપ્ટર વાઈઝ કે કાંઈ જ નહીં. મેં રાજુ ભટ્ટ ને પુછ્યું કે *આ શું?* તો કહે કે *એટલે તો તમે ને કાકા વાત કરતા હતા, ત્યારે અમે બ્હાર જ ઊભા હતા કે ગુરુજી ફોડશે હવે.* આમ, આ રીતનું. આટલી બધી પ્રવૃત્તિ, આટલા બધાં પેન્ડિંગ વર્ક, છતાં કાકાની કથા-વાર્તા અને ભજનમાં કાંઈ કાપ નહીં આવેલો. લગભગ ચાર-છ મહીના અમે ત્યાં રોકાયેલા. અમે થાકી જઇએ!

...આમ ભજનનો એટલો બધો એમનો આગ્રહ. અમે આ જોયેલું; પણ હજુ એકદમ અમલમાં નથી મૂકતાં, કારણ કે આપણને એમ લાગે કે 'ધૂન' શું? પણ કાકાએ એક જગ્યાએ લખેલું છે – ***'ધૂન બધું જ કરશે'***. આટલું જ નાનું સૂત્ર છે. 'બ્રહ્મપ્રવાહ'માં કૅપ્સ્યુલમાં મૂકેલું છે. આ પેરિસ મંડળને એ વાત મનાઈ ગઈ છે કે ધૂન કરીશું, તો આ બધું ઑટોમેટિક ગોઠવાશે. અને હકીકતે ગોઠવાતું ગયું. મને બે દિવસથી થયા કરે છે કે – અમે દિલ્હીમાં ૨૦૧૨નો સમૈયો કર્યો તેનું મનમાં એવું રહે કે બધું સરસ પાર ઉતારી દીધું, સરસ થઈ ગયું. પાંચ હજાર જણાને ત્યાં ઍડજસ્ટ કરવા, આ... તે... પણ **અહીંયાં બધું જોઈને ગર્વ ઓગળી ગયો કે અહીં તો આપણા કરતા ય ચઢી જાય એવા છે, હકીકતે.** પણ, **એ બધો જ પ્રતાપ આ મંડળે જે ધૂન કર્યા કરી, ભજન કર્યા કર્યું એનો છે.**

એટલે, પહેલી વાત આજે એ કરવાની છે કે આવા રહસ્યો આપણને કાકા અને પપ્પા જે આપી ગયા છે, એ આપણે દિલની સચ્ચાઈથી માનીએ. આપણે બધાં જ કાકાના સૂત્રો નથી બોલતા? બોલીએ જ છીએ. પપ્પાએ કહ્યું કે ***સામે આવેલા મુક્તને સ્વરૂપ માનીને વર્તો.*** આપણે ય બોલીએ છીએ પણ કેટલા માનીએ છીએ એ પ્રસંગે ખબર પડે. વિથ રિઝર્વેશન્સ માનતા હોઈશું. એટલે, **'હૅટ્સ ઑફ ટુ પેરિસ મંડળ'** કે એમણે આ વાતને સાચી માની.

એક હકીકત છે કે આપણે ચાલતા નથી ને, એટલે એ વાત આપણને અનુભવમાં આવતી નથી અને એટલે એમ થાય કે આ તો બધી સભામાં કરવાની વાતો હોય, બાકી કાંઈ થતું નથી. ઘણીવાર એવો છૂપો નાસ્તિકભાવ પણ આવી જતો હોય છે. એટલે આવી સાચી આસ્તિકતાથી-દિલની સચ્ચાઈથી આપણે માનવાનું શરૂ કરીએ.

એથી વિશેષ, સાહેબે ગઈ કાલે સરસ વાતો કરી કે શાસ્ત્રીજી મહારાજ અક્ષરપુરુષોત્તમની ઉપાસના માટે બ્હાર પડ્યા, પણ એમની વાતને કોઈ સમજ્યું નહીં. યુગલ ઉપાસના... યુગલ ઉપાસના... યુગલ ઉપાસના – રાધા કૃષ્ણની હતી, સીતા-રામની હતી, શિવ-શક્તિની હતી, એવી

આ યુગલ ઉપાસના ? **આપણી આ યુગલ ઉપાસનાનો મર્મ કહી દો કે રહસ્ય – એ પ્રગટની ઉપાસના પર જાય છે.** ૪૪ વર્ષ થઈ ગયા, તો ય કોઈ સમજ્યું નહીં. મને પણ થયું કે સાહેબે વાત કરી એ સાચી કે **બાપાએ કાકાને સાક્ષાત્કાર કરાવ્યો, એ પછી પ્રગટની ઉપાસનાનું જ્ઞાન વ્યાપક બન્યું.** આવા ઘણાં બધા રહસ્યો છે.

અત્યારે આપણે અહીં મહાપૂજા કરી. મહાપૂજામાં પણ રહસ્ય છે, પણ આપણે હજી સમજતા જ નથી. બહુ માર્મિક રીતે ગુણાતીતાનંદસ્વામીએ એની શરૂઆત કરાવેલી. ગોપાળાનંદસ્વામીને કહ્યું કે *સ્વામી, સોરઠના હરિભક્તોના દેશકાળ સારા રહે, એટલા માટે તમે અહીં મહાપૂજા કરો.* પણ, પછી એ મહાપૂજા પાછી ખોરંભે ચઢી ગયેલી ને પછી પાછી ચાલુ થઈ. આજે આપણા દરેક મંદિરમાં મહાપૂજા થાય છે. મહાપૂજા અને પૂજામાં શું ફરક ? પૂજામાં આપણે ભગવાન ને સંતની પૂજા કરીએ છીએ. મહાપૂજામાં ભગવાન, સંત અને મુક્તો-સત્સંગીઓની પૂજા થાય છે.

અહીં બ્હાર એક સૂત્ર છે. કાકા લેખ બહુ લખતા અને લખાવતા. એક વાર બધાંને લેખ લખવા આપેલો – 'અક્ષરપુરૂષોત્તમના સિદ્ધાંતે ભગવાન ભજવા એટલે શું ?' એમાં કાકાએ પોતે પણ તાડદેવના છોકરાઓ પાસે લેખ લખાવેલો. એમાં સહુથી પહેલું વાક્ય છે –

ધામ, ધામી અને મુક્તના ભજનથી અક્ષરપુરૂષોત્તમના સિદ્ધાંતે ભગવાન ભજવાની શરૂઆત થાય છે.

આ ય રહસ્ય છે. એ મહાપૂજામાંથી બ્હાર આવે છે. **પપ્પાજી** પૂછતા – *સુખે-સુખે કરવું છે, સુખે-દુઃખે કરવું છે કે દુઃખે-દુઃખે કરવું છે ?* સુખે-સુખે કરવું હોય તો આ મહાપૂજાનો સિદ્ધાંત આપણે પકડી રાખવો પડે. સાહેબ પણ ઘણા વખતથી વાત કરે છે કે *વર્ષો પછી મહારાજનું સર્વોપરીપણું વ્યાપક થયું. હવે કોઈને કહેવું પડતું નથી – 'સર્વોપરિ સ્વામિનારાયણ, સર્વોપરિ સ્વામિનારાયણ' !* સંત દ્વારા પ્રગટ છે એ પણ બધાં તરત જ માની જાય છે; એ સમજાવવું પડતું નથી. પણ, મુક્તોમાં દિવ્યભાવ રાખવાની વાત આવે ત્યારે જરા હજી... કારણ કે હજુ આપણે 'યૂઝ્ડ ટુ' થતાં નથી. 'યૂઝ્ડ ટુ' થતા નથી એનું કારણ એ કે આપણને હજી એ વાત મનાઈ નથી. એમાં નવા-જૂનાનો ય કોઈ મેળ નથી. કાકાજીએ ૨૬ જાન્યુઆરીના પ્રવચનમાં કહેલું કે *અમે એક વ્યવસ્થા ગોઠવી જઈએ છીએ.* ભજન ભગવાનનું, આત્મબુદ્ધિ-પ્રીતિ સંતો સાથે અને એવા મુક્તો સાથે મૈત્રીભાવ. એ આખી એક વ્યવસ્થા છે. એમણે તો કહેલું – *તમારે તો ખાલી 'સ્વિચ ઑન' જ કરવાની છે.* પણ એ ટેક્નીકમાં આપણને વિશ્વાસ નથી, એટલે એને અજમાવતા નથી. અજમાવતા નથી, એટલે એનું રિઝલ્ટ એકદમ મળતું નથી. જો ખરેખર કરીએ તો એનો ચસ્કો લાગી જશે કે આટલી સહેલાઈથી જો કામ થતું હોય, તો મચેડી-મચેડીને શાથી કરવું ? નવા આવેલા આ માની જાય છે. આ પ્રવીણભાઈ નવા જેવા જ છે આમ તો. પણ એને એ વાત મનાઈ ગઈ, તો એણે એ વાત પકડી રાખી. ગઈ કાલે સાહેબે ટેક્નોલૉજીની વાત કરી. અમે અહિંયા આવ્યા, તો નક્ષુને અમારા બધા જોડે બહુ હેત. એટલે થોડો હિજરાઇ ગયેલો. તો મેં એને કહ્યું કે *મેં તને આઈ-પૅડ આપ્યું છે ને, હું તારી સાથે એના*

પર વાત કરીશ. તો કહે – *ખરેખર મળશો ને ?* પછી પોતે જ કહે *મારા આઈ-પૅડમાં યૂ ટ્યૂબ (ટેંગો) છે.* તો હું વિચાર કરૂં કે શું હશે અંદર ? એને ખબર કે 'યૂ ટ્યૂબ' (ટેંગો) છે ને એનાથી વાત થશે. જો એને ટેકનીક આવડી ગઈ ! હજી મારે મોબાઈલ ટેલીફોન કરવો હોય તો સેવકની જરૂર પડે છે. તો, અધ્યાત્મના આવા બધાં રહસ્યો પણ આપણે માનીએ. કાકા બોલતા – ***'પ્રારંભ એજ પૂર્ણાહુતિ'***. પણ આપણને ક્યાં મનાય છે ? એમ થાય કે – અરે ! એવું તો કંઈ હોતુ હશે ? પણ, આ જે પુરૂષો મળ્યા છે, એ પ્રગટની ઉપાસના – એ કાળજું ટૂટ્યા જેવી વાત છે. શાસ્ત્રોની વાત આપણને એકદમ બેસી ગઈ છે એટલે એમાંથી બ્હાર આવી શકતા નથી. હજી ય 'શાસ્ત્રની વાત' એટલે આપણે શું માનીએ છીએ ? ગીતા છે, મહાભારત છે, ભાગવત છે – એ બધી શાસ્ત્રોની વાત. ગુણાતીતાનંદસ્વામીએ એક જગ્યાએ એક બોરડી ઉપર દૃષ્ટિ કરી અને સ્વામી બોલ્યા કે એનું કારણ શરીર ટળી ગયું. આપણા માટે જાગાસ્વામીએ પ્રશ્ન પૂછ્યો કે *સ્વામી, કારણ શરીર ટળવાની વાત તો મહારાજે કારિયાણીના ૧૨માં એવી કરી છે કે પ્રગટ સ્વરૂપનું ધ્યાન ને વચન એના થકી જ કારણ શરીર ટળે. તમે તો એમ ને એમ જ કહ્યું.*

જોગીમહારાજે એનો મર્મ સમજાવેલો કે *મોટા પુરૂષ આશીર્વાદ આપે એમાં શાસ્ત્રના શબ્દો આડા આવતા નથી.*

અહીં શાસ્ત્રના એટલે ? વચનામૃતના !

આપણે પણ ઘણીવાર આપણું ધાર્યું કરાવવું હોય તો વચનામૃત ને સ્વામીની વાતોનો રેફરન્સ આપીને જ્ઞાન ઓથું લીધા કરીએ છીએ...

કેટલીક વાર આપણે મોટાપુરૂષોના શબ્દો બોલતા રહીએ છીએ, પણ આપણને એક્ચ્યૂઅલી એનો અર્થ ખબર પણ નથી હોતો. આપણે બોલતા હોઈએ છીએ – *દિવ્યભાવ રાખો, દિવ્યભાવ રાખો, દિવ્યભાવ રાખો.* એકવાર મેં કાકાને પૂછ્યું કે *કાકા, આ દિવ્યભાવ રાખવો એટલે શું કરવાનું ? તમે બધાં ખૂબ મોટા છો, અમારાંથી કંઈ જુદા છો, એ તો મનાયું જ છે.* તો બોલ્યા – *રંચમાત્ર 'મનુષ્યભાવ - માયિકભાવ' ન હોય, એ દિવ્યભાવ.* આમાં પણ, આપણે મનુષ્યભાવ - માયિકભાવ એને એક જ માની લઇએ છીએ. મોટા પુરૂષનું કંઈ થોડું - ઘણું જરા ગમી જાય તો – *'અમને તો મોટાપુરૂષ માટે દિવ્યભાવ છે'* – એમ માની બેસીએ છીએ. પણ, જ્યાં મનની વૃત્તિથી વિરૂદ્ધ જાય એટલે બધું 'ફુસ' થઈ જાય. મને થયું કે કાકાએ વળી આ 'મનુષ્યભાવ અને માયિકભાવ' – બે વાત કરી. મેં કાકાને પૂછ્યું કે *કાકા, મનુષ્યભાવ - માયિકભાવ આમ તો એક જ ને ? કે કંઈ ફરક ?* કાકા કહે – *હું તને સમજાવું.* એમણે મને એક સરસ વાત કરી. મને કહે –

જો, આ હનુમાન છે ને, એને માયિકભાવ પણ નહીં ને સુગ્રીવને રામમાં મનુષ્યભાવ નહીં પણ માયિકભાવ ખરો. પછી મને કહે કે – *મોટા પુરૂષને પોતાની રીતે વરતવાનું હોતું નથી. એ એના ભક્તોના સંકલ્પે જ વરતતા હોય છે. આપણને એમ લાગે કે એમણે આમ કેમ કર્યું ? આપણને ક્યાં ખબર હોય છે કે કોના તાલે એ નાચતા હોય છે.*

આ વાત તે વખતે કરેલી. વર્ષો પછી, એકવાર આપણા હર્ષદભાઈએ વાત કરેલી. કાકા વિદ્યાનગર આવ્યા હશે. બુશર્ટ અને પેન્ટ પહેરીને આવેલા. હર્ષદભાઈને એ મૂર્તિ બહુ ગમી ગઈ ને બોલ્યા બી ખરા કે *કાકા, તમે બુશર્ટ અને પેન્ટ પહેરીને આવ્યા, બહુ સરસ લાગો છે.* સાથે હતો એ સેવક બધુ સાંભળતો હતો. હવે થયેલું એવું કે કાકા તાડદેવથી વિદ્યાનગર આવવા નીકળેલા, ત્યારે તો ધોતિયું ને પેલો ઝભ્ભો પહેરેલો હતો. બે દાદરા ઉતર્યા, પછી પાછા ઉપર ગયા અને ધોતિયું અને ઝભ્ભો કાઢી અને બુશર્ટ અને પેન્ટ પહેરીને નીકળ્યા ! બધાંએ નોંધ્યું તો હોય ને ! ઘણાને થયું કે કાકાજીએ આમ કેમ કર્યું હશે ? ધોતિયું બી સારૂં જ હતું. પણ ત્યાં હર્ષદભાઈના સંકલ્પે બધું બદલાઈ ગયું – એ ખબર ના પડી હોય ને ? એવી રીતે, રાવણે વિભિષણનું અપમાન કરી એને કાઢી મૂક્યો કે તને રામ બહુ ગમતા હોય તો તું ત્યાં જતો રહે, અહીં લંકામાં નહીં રહેતો. વિભિષણને ત્યારે મનમાં એમ વિચાર થયેલો કે હું જઈશ તો રામજી મને સ્વીકારી તો લેશે, પણ લંકા જીતી ને બી મને જ આપશે. એ જેવા રામ પાસે ગયા, રામચંદ્રજીએ કહ્યું – *આવો 'લંકેશ'!* રામજી તો બોલેલા એના મનમાં હતું એ પ્રમાણે. ત્યાં સુગ્રીવ બેઠેલા. એને એમ થયું કે ભગવાને હજી તો લડાઈ શરૂ કરી નથી અને આ શું બોલી નાખ્યું ? અમે જેમ ઘણીવાર સ્વામી માટે કહીએ કે *સ્વામી બહુ ઉતાવળા – બહુ ઉતાવળા !* સુગ્રીવે પણ રામ ને કહ્યું કે *પ્રભુ, તમે બહુ ઉતાવળ કરી નાખો છો. હજી લડાઈ પણ ક્યાં ચાલુ થઈ છે.* રામચંદ્રજીએ પૂછયું ય કે *તને એમ લાગે છે કે આપણે હારી જઈશું ?* તો કહે – *ના, ના પ્રભુ ! તમે જ્યાં હો, ત્યાં 'જય જયકાર' તો હોય જ. એટલે હારવાની તો શંકા છે જ નહીં.* આપણે બી આવું બધું ઘણું કરતા હોઇએ છીએ. સુગ્રીવે દલીલ કરી કે *રાવણને પસ્તાવો થાય અને સીતાજીને તમારી પાસે લાવી માફી માંગી પાછી આપી જાય, તો પછી તમે શું કરશો ? અને અત્યારે તો યુદ્ધનો સેનાપતિ હું છું, તમારે મને પૂછવું તો હતું !* ત્યારે રામજી બોલ્યા કે *જો એવું બનશે, તો રાવણને હું મારી અયોધ્યા આપી દઈશ, પણ આને લંકા આપવી એ પાકું.* આને કહેવાય કે સુગ્રીવને રામ માટે મનુષ્યભાવ ન્હોતો, પણ આવો માયિકભાવ તો રહે કે આટલું ઠીક કર્યું ને આટલું ઠીક ન કર્યું. જેમ કે – સ્વામી, તમારે બહુ ઉતાવળ ન્હોતી કરવી જોઈતી. આપણે આવું ઘણીવાર બોલતા - વિચારતા જ હોઈયે છીએ. જ્યારે હનુમાનજી, એને ગમે તે હોય ને ! એને કોઈ શંકા જ નહીં. પત્થરવાળી વાત બધાં જ જાણે છે કે 'રામ નામે' પત્થર તર્યા. રામજીને પોતાને થયું કે *'હું ય નાખી જોઉં. જો તરતા હોય તો બધાં પત્થરને હાથ લગાડી આપીશ અને સેવકો ને કહીશ કે લખવાની માથાકૂટ નહીં કરો, અહીંથી લઈ જાઓ ને બધાં તરશે.'* પણ, રામજીએ અખતરા માટે સમુદ્રમાં ફેંકેલો પત્થર ડૂબી ગયો. રામચંદ્રજી ને થયું કે આ તો નકામું ગયું. વળી, પાછળ જ હનુમાન હતા. પણ, એમણે કહ્યું કે *જે થયું એ બરાબર જ થયું છે. રામજી જેને છોડી દે, ફેંકી દે, એ તો ડૂબી જ જવાનો છે.* આ છે દિવ્યભાવ ! એને સહેજે માયિકભાવ નહીં. રામજીએ આ અખતરો કેમ કર્યો એ વાત પણ નહીં. મારા પ્રભુ જે કરે એ દિવ્ય. આમ સુગ્રીવને મનુષ્યભાવ નહીં પણ માયિકભાવ ખરો. જ્યારે હનુમાનને એવો માયિકભાવ પણ નહીં. એ આવો ફરક. હું એ કહેતો હતો કે આવી બધી વસ્તુઓ આપણને ખબર પણ હોતી નથી.

હું ઘણીવાર વાત કરૂં છું કે – અહોહો ! બાપાએ તો ખરેખર ખૂબ મહેર કરી કે આપણને આ બે ભાઈઓનો તદ્દન અલાયદો, એક્સક્લૂઝીવ જોગ આપી દીધો. એટલા માટે કે તમારે જો અપલિફ્ટમેન્ટ કરવી હોય, તો એમની અંડર ટ્રેઈનિંગ લો અને કરી લો. પણ આપણને એમના માટે જ થોડો વિશ્વાસ - અવિશ્વાસ ! ઘણીવાર આપણને એમ થાય કે આ પુરૂષો વાતને પોતાની રીતે જ ડિસ્ટૉર્ટ કરી નાખે છે.

એક સરસ વાત કરૂં. અમે અક્ષરભુવનમાં હતા. ત્યાં બધાંને થયું કે ચિન્મયાનંદનો પ્રોગ્રામ જોવા જઈએ. મહંતસ્વામી આગળ કંઈ વાત કરી હશે. તે વખતે અમે તો બધાં નાના ; પણ ઈશ્વરચરણસ્વામી, નારાયણભગત, કોઠારીસ્વામી ને બધાંએ પ્રોગ્રામ ગોઠવ્યો. બાપા પાસે એની ઍપ્રુવલ બી મંગાવેલી અને અમે બધાં જોવા ગયા. જોઈને આવ્યા પછી બે - ચાર દિવસે બાપા મુંબઈ આવ્યા હતા કે આવવાના હતા. એમણે આજ્ઞા કરી કે તમે ચિન્મયાનંદના પ્રોગ્રામમાં ગયેલા ત્યાં ડોશીઓ હોય, તો હવે કાલે બધાં એક - એક અપવાસ કરજો. ઉપવાસની વાત આવે એટલે મારા મોતિયા જ મરી જાય. મને મનમાં એવું કે ડૉક્ટરસ્વામી ને બધાંએ આ બધું પૂછીને કરેલું ને બાપા ઉપવાસ ઠોકી દે. ઉપવાસની ગમગીનીમાં ડૂબેલો તો હતો જ. બીજે દિવસે પપ્પા મંદિરે આવેલા. સવારના વચનામૃત સમજાવવા વારા પ્રમાણે આવતા - કરતા. સભા પૂરી થઈ - કરી પછી પપ્પા નીચે અમને બધાંને મળવા આવતા. મારી તરફ જોઈને એકદમ કહે – *રાજા! લાડવો ખાધોને ચિન્મયાનંદનો.* એક તો અંદરનો બળાપો હતો, એમાં પાછા પપ્પા કહે કે *લાડવો ખાધોને ચિન્મયાનંદના ત્યાં જઈને !* મેં બચાવ કરવા ખાતર ઉપર - ઉપરથી કહ્યું કે *ડોશિયો હોયને ? એટલે બાપાએ આપ્યો.* તો કહે – *તમારી કોઈની નજરે ય ગઈ હશે કે ડોશિયો તરફ ? એનો ઉપવાસ હોય ? શું લાડવો હતો કે ત્યાં ગયેલા ? બાપા સિવાય ત્યાં કેમ ભાર પડ્યો તમને ?* મને તે વખતે હકીકતમાં એવું લાગ્યું કે પોતાની જ સમઝણનો ઝંડો ઊંચો રાખવાની આ વાત છે. એ વાત તો તે વખતે જ બાપાએ કરી હશે, પણ વર્ષો પછી 'યોગીવાણી' છપાઈ તેમાં, પેઈજ નંબર ૨૦ પરની ૨૦મી વાત છે કે – ***ફલાણા સાધુ બહુ સારા એટલો બી ગુણ અંદર પેસી જાય, તો સમજવું તમારી વૃત્તિ તમારા સંતમાંથી ગૌણ થઈ.*** આમ વાત તો પપ્પાની જ સાચી હતી. મૂળ રહસ્ય એ કે ત્યાં શું કરવા ગયા હતા ? પણ, હજુ આપણે એ જ કરીએ છીએ –

શું એની ઑરેટરી છે ! સ્પેલબાઉન્ડ કરી નાખે. શું એનું તપ ! શું એની ભક્તિ !

આપણને આવા બધાં પ્રભાવ પડી જ જતા હોય છે. ખરેખરી જો એવી નિષ્ઠા હોય - હેત હોય, જે બાપા કહેતા હતા, તો આ ના બને.

... મને યાદ છે, મલ્કાની નવા - નવા અમારા કૉન્ટેક્ટમાં આવેલા ને પછી મંદિરનું ખાત - મુહૂર્ત કરવાનું હતું. તે માટે મને વર્ષો પહેલા એમણે કહેલું કે જ્યારે આપણે મુહૂર્ત કરીએ, ત્યારે રામકીંકરજીને બોલાવીશું અને રામાયણની કથા કરાવીશું. અને... જ્યારે ખાતમુહૂર્ત કરવાનું ટાણું આવ્યું, ત્યારે

મેં મલ્કાનીને કહ્યું કે – *મલ્કાની, આપ કહ રહે થે ના કિ રામકીંકરજી કો બુલાના હૈ, તો આપ ઉસકી પૈરવી શુરૂ કર દેના.* પણ, ત્યારે એ કહે – *ક્યોં રામકીંકરજી કો બુલાને હૈં! સ્વામીજી આને વાલે હૈં, સાહેબ આને વાલે હૈં, પપ્પાજી આને વાલે હૈં, તો રામકીંકરજી ક્યા કરેંગે?* આવા નવા આવનારા હોય એ બી આપણને આ શીખવતા હોય. પણ આપણને એ બધી વાતોને હજી, ખબર નહીં માયિકભાવ હશે કે કેમ પણ, પકડતા નથી.

કાકા કહેતા – *તમારે કરવું જ નથી.* મહંતસ્વામીએ એક સરસ વાત કરી છે કે – *જે કંઈ વાતો કરીએ છે, એ જો કરીએ તો થાય જ.* અર્થાત્ – **મોટા પુરૂષ જે વાતો કરે છે, એ જો આપણે કરીએ તો થાય** જ. પણ આપણું 'સ્લોગન' જુદું છે – ***'જેટલું થાય એટલું કરશું!'*** પછી એનો કંઈ ઉપાય જ નથી.

એટલે આ પ્રવીણભાઈના પેરિસ મંડળના દાખલા ઉપરથી આપણે એટલું શીખીને જ જઈએ કે આપણે હવે આ રસ્તે ચાલવું જ છે. આપણને કેવાં પુરૂષો મળ્યા? એમને ધાવેલા સાહેબ, સ્વામિજી – બધા છે આજે બેઠેલા. હજી એ લ્હાવો એવો ને એવો જ છે. પણ એ જે વાતો કરે છે એમાં કાંઈ પણ શંકા કર્યા વગર, એ કહે છે એ વાત સાચી છે – એમ માનીએ.

આપણે સબંધની વાત કરીએ છીએ ને, એવી એક સબંધની વાત થયેલી. અક્ષરભુવનમાં શિવલાલ શેઠનો એક પ્રસંગ નીકળ્યો. હર્ષદભાઈ બેઠેલા, કાકા હતા, પપ્પા હતા અને હું બેઠેલો. હર્ષદભાઈ પાસે હું ગીતા શીખતો હતો. એટલે એ બેઠા હતા. તો, અમને જોઈને કાકા અને પપ્પા બી ત્યાં બેઠા. પછી એમાંથી કંઈ શિવલાલ શેઠનો પ્રસંગ નીકળ્યો. સ્વામિની એક વાત છે કે સભામાં આવતા મંદિરે આવવામાં મોડુ થયું ; તો સ્વામીએ શિવલાલને પૂછ્યું કે – *ક્યાં ગયો હતો?* તો કહે – *એક સોદો કર્યો ને મંદિરની રસોઈ લાવ્યો.* જે નફો થયો, એ ઘરે તો લઈ જ ન્હોતા ગયા, મંદિરમાં જ આપ્યો. મંદિરના કામ માટે જ ડીલ કરેલું. તોય સ્વામીએ એમને ખખડાવ્યા *કે – ઢૂંસાનો સોદો કરવાનું મન થાય છે?* મેં સહજ પૂછ્યું – *કાકા આમાં એણે શું ખોટું કર્યું? સોદો કરીને એણે આપ્યું તો મંદિરને જ ને? મંદિરનું જ મમત્વ છે ને?* ત્યાં હર્ષદભાઈ બોલ્યા – *'સાત્વિક અહમ્' નડી ગયું.* કાકા - પપ્પા ત્યારે તો કંઈ બોલ્યા નહીં. પછી કાકા મને કહે – *પેલા કહેતા હતા ને 'સાત્વિક અહમ્' નડી ગયું; સાત્વિક અહમ્ - બહમ્ કાંઈ નડયું ન્હોતું, પણ ગુણાતીતાનંદસ્વામી સાથેના સંબંધમાં જે ગાબડુ પડ્યું હતું એની ટકોર હતી.* શિવલાલ શેઠને સ્વામી સાથે ખૂબ હેત હતું, પણ ગઢડાવાળાના સંબંધે - એમના શબ્દોથી એમાં થોડી ઓછપ આવેલી. પહેલાં તો સ્વામી બેઠા હોય ને કોઈ કામ નહીં હોય, તો સ્વામી પાસે જ પ્હોંચી જાય. એ ફાંસલો પડેલો. ત્યાં સ્વામી એને ટકોર કરતા હતા. અને તેથી તો સ્વામીએ કહેલું કે –

આવી ને આવી વાતો ૬ મહીના સુધી કરીશ, ત્યારે તો જે અડધો સત્સંગ રહ્યો છે તે તને વળશે.

આ પણ કેટલી ટેકનીકલ વાત છે. 'અડધો સત્સંગ'નો અર્થ એ કે હું બેઠો છું એટલે હજી બરોબર

થઈ જશે ને પાછો પૂરો સત્સંગ થઈ જશે. 'અડધો કુસંગ' શબ્દ ના વાપર્યો. એક જગ્યાએ વચનામૃતમાં *'એને અડધો કુસંગી જાણવો'* એમ બોલ્યા છે. મતલબ હવે કુસંગ તરફ જ દોડ રહેવાની. ત્યાંથી રિટ્રીટ થવાના કોઈ ચાન્સિસ નથી.

મારું કહેવું એ જ છે કે આ બધાં જ રહસ્યો આપનારા આવા પુરૂષો હજી બેઠા છે ; એમના ભરોસે આપણે આંધળી દોટ મૂકી દઈએ. ઘણી વાર વિચાર આવે કે એ તો કાકા હતા, એ તો પપ્પા હતા, પણ છેવટે એટલું બી તો માનીએ કે આમનું કન્ટ્રોલિંગ પણ એમનું જ છે. તો, આપણે માટે ય એઓ એમને કશે મિસલીડ નહીં થવા દે. આમ એવી ધામ, ધામી અને મુક્તોની નિષ્ઠા પાકી કરીને આપણે અહીંથી જઈએ એટલી જ પ્રાર્થના. સહજાનંદસ્વામી મહારાજની જય.

हिन्दी अनुवाद :

प.पू. गुरुजी

मैं जब से पेरिस आया, तब से एक ही बात मेरे दिमाग़ में घूमती रही है कि इस समैया का आयोजन करने की ये प्रवीणभाई ने खूब हिम्मत की! यहाँ न तो हमारा ऐसा कोई समाज है, और न ही ऐसे पात्र हैं; फिर भी बीड़ा उठा लिया। बचपन में एक मुहावरा सुना था– *'हिम्मते मर्दा, तो मददे खुदा'*; यह मुहावरा यहाँ साकार हुआ दिखता है। इन्होंने सिर्फ हिम्मत दिखाई ऐसा नहीं है। खुदा भी तो ऐसे ही मदद नहीं करते। तुम मांगोगे तो मिलेगा – और... मांगने की रीत है : 'भजन'। मैंने तो उनकी बात सुनी और... एकदम काकाजी याद आए। पिछले दो महीने से रोज सुबह और शाम सभी ने एक-एक घंटा धुन की! एक तो शॉर्टेज ऑफ मॅन पावर, शॉर्टेज ऑफ टाइम ऑल्सो। उसमें भजन करना। हमारे पास यदि थोड़ा-सा काम बढ़ जाता है, तो कटौती बस भजन में आ जाती है। व्यक्तिगत प्रवृत्ति में भी यदि घिरे होंगे, तो और सब कुछ व्यवस्थित करेंगे। मैं कई बार यह बात कहता हूँ कि पूरी चाय पीने के लिए हम समय निकाल लेंगे, ऐसा नहीं कि आधा कप पीयेंगे। शेविंग भी अच्छी तरह कर लेंगे; लेकिन जब माला फेरने का समय आएगा, तो सोचेंगे कि फिलहाल एक माला फेर लेता हूँ, बाकी की शाम को लौट कर फेर लूँगा। कटौती एकदम भजन में ही हो जाती है, क्योंकि ठाकुरजी कुछ कहते नहीं - दयालु हैं। लेकिन, काकाजी की हीरक जयंती जो हमने 1978 में मनाई, इसके हम सब तो साक्षी हैं। कितनी अधिक प्रवृत्ति! एक ओर 'रीयल इसन्स ऑफ तंत्र' का काम चलता था। काकाजी का ऐसा था कि जो भी साधन मिले उससे काम चला कर वे सब कुछ पूरा करते। मुझे अभी भी 'रीयल इसन्स ऑफ तंत्र' की बात याद है। मुझे बुला कर पहले ही दिन फाईल देते हुए कहा – यह सब तैयार हो गया है, अब तू देख ले तो इसे प्रेस में दे आएँ। काकाजी तो विश्राम में चले गए। मेरे मन में विचार आया कि सोने से पहले मैं एक बार यह फाईल देख तो लूँ। फाईल खोल कर देखी, तो मैं सन्न रह गया; यह सोच कर कि इसे छपने के लिए प्रेस में देना है! इसमें तो कुछ भी समझ नहीं आ रहा। चॅप्टर वाईज़ या कुछ भी नहीं है। मैंने राजु भट्ट से पूछा के यह क्या है ? तो वे बोले – इसीलिए तो जब आप और काकाजी बात कर रहे थे, तब हम बाहर खड़े हुए थे कि अब गुरुजी निपटाएँगे। इस प्रकार की हालत, इतनी सारी और प्रवृत्ति, इतने सारे पॅन्डिंग वर्क, फिर भी काकाजी की कथा-वार्ता और भजन में कभी कोई कटौती नहीं आई थी। करीब चार-छः महीने मैं वहाँ रूका था। हम तो थक जाते थे!

...यूँ धुन-भजन के लिए काकाजी का विशेष आग्रह रहता था। हमने यह स्वयं देखा है। 'ब्रह्मप्रवाह' में एक कॅप्स्युल में एक जगह, एक छोटे से सूत्र के रूप लिखा भी है– ***'धुन सब कुछ करेगी।'*** लेकिन, यह सब जानते और देखते हुए भी, हम इस पर पूरी तरह अमल नहीं करते। पर, पेरिस मंडल ने यह बात मान ली है कि धुन करेंगे, तो यह सब ऑटोमेटिक हो जाएगा और हक़ीक़त में होता गया। दो दिन से मैं यह सोच रहा हूँ कि हमने दिल्ली में 2012 का समैया किया, उसके लिए मन में ऐसा रहा कि सब कुछ अच्छी तरह पार उतार दिया, सब कुछ अच्छी तरह संपन्न हो गया। पाँच हज़ार लोगों को वहाँ एड्जस्ट करना वगैरह... लेकिन **यहाँ सब देख कर गर्व उतर गया कि ये तो हम से भी बढ़ कर हैं, हक़ीक़त में ऐसा है।** लेकिन, **इस मंडल ने जो धुन की, भजन किया–यह सब उसी का प्रताप है।**

सो, पहली बात तो आज यह करनी है कि ऐसे रहस्य जो काकाजी और पप्पाजी हमें दे गए हैं, उन्हें हम दिल की सच्चाई से मानें। क्या हम सभी काकाजी के सूत्र नहीं दोहराते? बोलते ही हैं। पप्पाजी ने कहा कि ***सामने आए हुए मुक्त को स्वरूप मान कर वर्तो।*** हम भी दोहराते हैं, लेकिन कितना मानते हैं, वह प्रसंग पर ख्याल पड़ता है। विथ रिज़र्वेशन्स मानते होंगे। **'हॅट्स ऑफ टु पेरिस मंडल'** कि उन्होंने इस बात को सच माना।

हक़ीक़त यह है कि हम चलते नहीं, सो ये बातें हमारे अनुभव में आती नहीं और इसलिए ऐसा सोचते हैं कि ये सारी बातें तो सभा में करने की होती हैं, बाकी कुछ होता नहीं। कई बार ऐसा छुपा नास्तिकभाव भी आ जाता है। अतः काकाजी व पप्पाजी द्वारा बताए गए सूत्रों को, रहस्यों को सच्ची आस्तिकता से-दिल की सच्चाई से हम मानना शुरू करें।

इससे भी अधिक, साहेब ने कल अच्छी बात कही कि शास्त्रीजी महाराज अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना के लिए बाहर निकले, लेकिन उनकी बात को कोई समझा नहीं। युगल उपासना... युगल उपासना... युगल उपासना–राधा कृष्ण की थी, सीता-राम की थी, शिव-शक्ति की थी, ऐसी यह युगल उपासना है क्या? **हमारी इस युगल उपासना का मर्म कहो या रहस्य–'प्रगट की उपासना' पर जाता है।** 44 वर्ष बीत गए, तब भी कोई समझा नहीं। मुझे भी लगा कि साहेब ने बात तो सच्ची की कि **बापा ने काकाजी को साक्षात्कार कराया, उसके बाद ही प्रगट की उपासना का ज्ञान व्यापक हुआ।** ऐसे कई कितने रहस्य हैं।

अभी हमने यहाँ महापूजा की। महापूजा में भी एक रहस्य है, लेकिन हम अभी समझे ही नहीं हैं। बहुत मार्मिक रूप से गुणातीतानंदस्वामी ने इसकी शुरुआत कराई थी। उन्होंने गोपालानंदस्वामी से कहा कि *स्वामी, सोरठ के हरिभक्तों की हालात अच्छे रहें, उसके लिए आप यहाँ महापूजा करिए।* लेकिन, वह महापूजा जारी नहीं रही और फिर दोबारा शुरू हुई। आज हमारे हर एक मंदिर में महापूजा होती है। महापूजा और पूजा में क्या फर्क? पूजा में हम भगवान और संत की पूजा करते हैं। महापूजा में भगवान और संत के साथ मुक्तों-सत्संगियों की पूजा होती है।

यहाँ बाहर एक सूत्र लिखा हुआ है। काकाजी बहुत लेख लिखते और लिखवाते। एक बार सभी को लेख लिखने के लिए दिया–'अक्षरपुरुषोत्तम के सिद्धांत से भगवान भजना यानि क्या?' काकाजी ने ताड़देव के योगेश्वरों से भी खुद लिखवाया था। उसमें सबसे पहला वाक्य है–

धाम, धामी और मुक्त के भजन द्वारा अक्षरपुरुषोत्तम के सिद्धांत से भगवान भजने की शुरुआत होती है।

यह भी रहस्य है, जो महापूजा में से बाहर आता है। **पप्पाजी** पूछते थे– *सुख-सुख से करना है, सुख-दुःख से करना है या दुःख-दुःख से करना है?* सुख-सुख से करना हो, तो महापूजा का यह सिद्धांत हमें पकड़ कर रखना चाहिए। साहेब भी काफी समय से बात करते हैं कि वर्षों के बाद महाराज की सर्वोपरिता व्यापक बनी। अब किसी को कहना नहीं पड़ता– *'सर्वोपरि स्वामिनारायण, सर्वोपरि स्वामिनारायण!'* संत के द्वारा प्रगट हैं – वह भी कहना नहीं पड़ता। सभी तुरंत ही मान जाते हैं; किसी को समझाना नहीं पड़ता। लेकिन, मुक्तों में दिव्यभाव रखने की जहाँ बात आती है वहाँ अभी ज़रा... क्योंकि अभी हम 'यूज़्ड टु' नहीं हुए हैं। 'यूज़्ड टु' नहीं होने का कारण यह है कि हम अभी भी इस बात को मान नहीं पाए हैं। उसमें नए - पुराने का भी कोई मेल नहीं है।

काकाजी ने 26 जनवरी के प्रवचन में कहा था कि हम एक व्यवस्था स्थापित कर रहे हैं – भजन भगवान का, आत्मबुद्धि-प्रीति संतों के साथ और मुक्तों के साथ मैत्रीभाव। यह सारी एक व्यवस्था है। उन्होंने तो कहा था – तुम्हें तो केवल 'स्विच ऑन' ही करना है। लेकिन, इस टेकनीक में हमें विश्वास नहीं, सो आजमाते नहीं। आजमाते नहीं, इसलिए उसका रिज़ल्ट एकदम मिलता नहीं। यदि सच में करें, तो उसका चस्का लग जाएगा कि इतनी आसानी से यदि काम होता है, तो मचेड़ - मचेड़ कर क्यों करना? नए आए हुए यह बात मान जाते हैं। देखा जाए तो ये प्रवीणभाई नए जैसे ही हैं। लेकिन यह बात उन्होंने मानी, तो पकड़ भी ली। कल साहेब ने टेकनोलॉजी की बात की। (दिल्ली में) नक्षु हम सभी से खूब लगाव से जुड़ा हुआ है। हम जब यहाँ आ रहे थे, तब वह थोड़ा उदास हो गया। मैंने उससे कहा कि *मैंने तुझे आई-पॅड दिया है न, उस पर मैं तुझसे बात करूँगा।* वह बोला कि *सच में मिलोगे न?* फिर खुद ही बोला कि *मेरे आई-पॅड में यू ट्यूब (टेंगो) है।* मैं सोच में पड़ गया कि उसके आई पॅड में यह क्या होगा? उसे यह भी पता है कि 'यू ट्यूब' (टेंगो) पर बात हो सकती है। देखो, उसे टेकनीक आ गई। और मुझे अभी भी मोबाइल पर फोन लगाना हो, तो सेवक की जरूरत पड़ती है। तो, अध्यात्म के ऐसे सभी रहस्यों को हम भी मानें। काकाजी कहते– ***'प्रारंभ ही पूर्णाहुति'***। लेकिन हम कहाँ मान पाते हैं? ऐसा लगता है कि – अरे! ऐसा भी कहीं होता होगा? लेकिन, ये पुरुष जो मिले हैं, यह प्रगट की उपासना - वह कलेजा टूटने जैसी बात है। शास्त्रों की बात हमारे मन में एकदम बैठ गई है, सो उसमें से बाहर नहीं आ पाते। अभी भी 'शास्त्र की बात' का मतलब हम क्या समझते हैं? गीता है, महाभारत है, भागवत है – ये सभी शास्त्रों की बातें हैं। गुणातीतानंदस्वामी ने एक जगह एक बेरी के ऊपर दृष्टि की और वे बोले कि इसका कारण शरीर टल गया। हमारे लिए जागास्वामी ने प्रश्न पूछा – *स्वामी, कारण शरीर टलने की बात तो महाराज ने कारियाणी के 12वें वचनामृत में इस प्रकार से की है – प्रगट स्वरूप का ध्यान और वचन पालन से ही कारण शरीर टलता है। आपने तो ऐसे ही कह दिया।*

जोगी महाराज ने इसका मर्म समझाया कि – बड़े पुरुष आशीर्वाद दें, उसमें शास्त्र के शब्द बाधा नहीं डाल पाते।

यहाँ 'शास्त्र' यानि? वचनामृत!

हमें भी कई बार अपनी मनमानी करनी होती है, तो वचनामृत और स्वामी की बातों का रेफरन्स देकर ज्ञान की आड़ लेते रहते हैं...

कई बार हम बड़े पुरुषों के शब्द दोहराते रहते हैं, लेकिन दरअसल हमें उनका अर्थ भी पता नहीं होता। हम बोलते हैं – *दिव्यभाव रखो, दिव्यभाव रखो, दिव्यभाव रखो।* एक बार मैंने काकाजी से पूछा – *काका, दिव्यभाव रखने का मतलब क्या होता है? आप सब बहुत बड़े हैं, हमसे कुछ अलग ही हैं, यह तो माना ही है।* वे बोले – *रंचमात्र 'मनुष्यभाव - मायिकभाव न हो, वह दिव्यभाव'।* इसमें भी, हम मनुष्यभाव - मायिकभाव को एक ही मान लेते हैं। यदि बड़े पुरुष (संत) हमारी मनपसंद बात कहें तो – *'हमें तो संत के प्रति दिव्यभाव है'* – ऐसा मान बैठते हैं। लेकिन, जहाँ वे मन की वृत्ति के विरुद्ध जाते हैं, तब सब कुछ 'फुस' हो जाता है। सो, मैंने सोचा कि काकाजी ने तो 'मनुष्यभाव और मायिकभाव' – यूँ दो अलग - अलग बताया। सो, मैंने काकाजी से पूछा – *काका, मनुष्यभाव - मायिकभाव यूँ तो एक ही हैं न या कुछ फर्क है?* काकाजी ने कहा – *मैं तुझे समझाता हूँ।* उन्होंने मुझसे एक अच्छी बात की। मुझसे बोले –
देखो, हनुमान है न, इसे तो राम के प्रति मायिकभाव भी नहीं, पर सुग्रीव के मन में राम के प्रति मनुष्यभाव तो नहीं था, लेकिन मायिकभाव जरूर था। फिर मुझसे कहा – *बड़े पुरुष अपनी रीति से नहीं वर्तते, वे तो अपने भक्तों के संकल्प से ही वर्तते हैं। कई बार हमें ऐसा लगता है कि उन्होंने ऐसा क्यों किया? हमें क्या पता होता है कि वे किसकी ताल पर नाच रहे होते हैं।*

यह बात तब की थी। इसके वर्षों बाद काकाजी विद्यानगर आए थे। उस समय उन्होंने बुशर्ट - पैंट पहनी हुई थी। हर्षदभाई को वह मूर्ति बहुत जँच गई और बोले भी – *काकाजी, आप बुशर्ट और पेन्ट में बहुत अच्छे लग रहे हो।* साथ खड़ा हुआ सेवक सब सुन रहा था। तब ऐसा हुआ था कि काकाजी ताड़देव से जब विद्यानगर आने के लिए निकले, तो उन्होंने धोती और कुर्ता (झब्बा) पहना हुआ था। दो सीढ़ी उतरे ही थे कि वापिस ऊपर गए और धोती व कुर्ता उतार कर, बुशर्ट और पेन्ट पहन कर आए। सभी नोट तो करते ही हैं! कइयों को हुआ कि काकाजी ने ऐसा क्यों किया? धोती भी तो अच्छी थी। लेकिन, वहाँ हर्षदभाई के संकल्प से सब कुछ बदल गया है – ऐसा तो किसी को ख्याल ही नहीं आया होगा न? इसी प्रकार, रावण ने विभीषण का अपमान करके उसे निकाल दिया था कि तुझे राम बहुत पसंद आते हैं, तो तू वहीं चला जा; यहाँ लंका में मत रह। विभीषण के मन में तब ऐसा विचार आया कि मैं जाऊँगा, तो रामजी मुझे स्वीकार तो कर लेंगे, लेकिन लंका जीत कर भी मुझे ही देंगे। वे जैसे ही राम के पास गए, रामचंद्रजी ने कहा – *आओ 'लंकेश'!* रामजी तो उसके मन में जो था, उसके मुताबिक बोले। वहाँ सुग्रीव बैठा था। उसने सोचा – *भगवान ने अभी तो लड़ाई शुरू भी नहीं की और यह क्या बोल दिया?* जैसे कि हम कई बार स्वामी के लिए कहते हैं कि स्वामी बहुत जल्दबाज हैं - बहुत जल्दबाज हैं! सुग्रीव ने भी राम से कहा – *प्रभु, आप बहुत जल्दबाजी कर रहे हैं। अभी तो लड़ाई शुरू भी नहीं हुई है।* रामचंद्रजी ने पूछा भी कि *क्या तुझे ऐसा लगता है कि हम हार जाएँगे?* तो वह बोला – *ना, ना प्रभु! आप जहाँ हो, वहाँ 'जय जयकार' तो होगा ही। सो, हारने की कोई शंका नहीं है।* हम भी ऐसा बहुत कुछ करते रहते हैं।

सुग्रीव ने दलील की – *रावण को यदि पछतावा हुआ और आपसे माफ़ी मांग कर सीता को लौटा दे, तो फिर आप क्या करोगे? और, फिर फिलहाल तो युद्ध का सेनापति मैं हूँ, आपको मुझसे पूछना तो चाहिए था!* तब रामजी बोले – *यदि ऐसा होगा, तो रावण को मैं अपनी अयोध्या दे दूँगा, लेकिन इसे लंका दे दी, यह तो पक्का ही है।* इस बात से यह तो स्पष्ट है कि सुग्रीव को राम के लिए मनुष्यभाव तो नहीं था, लेकिन ऐसा मायिकभाव तो था ही कि इतना ठीक किया और इतना ठीक नहीं किया। जैसे कि – 'स्वामी, आपको इतनी जल्दीबाजी नहीं करनी चाहिए थी' – ऐसा हम कई बार बोलते, सोचते रहते हैं। जबकि हनुमानजी के लिए तो कुछ भी हो न! उन्हें कोई शंका ही नहीं थी। पत्थर वाली बात सभी जानते हैं कि 'राम नाम' से पत्थर तैर गए। रामजी ने सोचा – *'मैं भी डाल कर देखूँ। यदि तैर जाएँगे, तो सभी पत्थरों को हाथ लगा दूँगा और सेवकों से कह दूँगा कि लिखने की झंझट मत करो, यहाँ से ले जाओ और सभी पत्थर तैर जाएँगे।'* लेकिन, देखने के लिए, रामजी ने समुद्र में जो पत्थर फेंका, वह डूब गया। रामचंद्रजी को लगा कि यह प्रयास तो विफल रहा। पीछे ही हनुमानजी खड़े थे जिन्होंने कहा – *जो भी हुआ, वह ठीक ही हुआ है। रामजी, जिसे आप छोड़ दें, फेंक दें, वह तो डूब ही जाता है।* यह है दिव्यभाव! उन्हें सहज भी मायिकभाव नहीं था। रामजी ने ऐसा चरित्र क्यों किया, यह बात भी सोची नहीं। मेरे प्रभु जो करें वह दिव्य। यूँ, सुग्रीव को मनुष्यभाव नहीं, लेकिन मायिकभाव जरूर था; जबकि हनुमानजी को मायिकभाव भी नहीं था। दोनों में ऐसा फर्क। मैं यह कह रहा था कि ऐसी सारी बातों के बारे में तो हमारा ध्यान भी नहीं जाता!

मैं कई बार कहता हूँ अहोहो! बापा ने तो सच में बहुत कृपा की कि हमें इन दो भाइयों का बिल्कुल अलायदा - एक्सक्लूसीव संबंध दे दिया। वह इसलिए कि तुम्हें यदि अपलिफ्टमेन्ट करनी हो, तो उनके अंडर ट्रेईनिंग लो और कर लो। लेकिन, हमें उनके प्रति ही थोड़ा विश्वास-अविश्वास! कई बार हमें ऐसा लगता है कि ये पुरुष बातों को अपने ढंग से डिस्टॉर्ट कर डालते हैं।

एक अच्छी बात करता हूँ। हम अक्षरभुवन में थे। वहाँ सभी की इच्छा हुई कि चिन्मयानंद का प्रोग्राम देखने के लिए जाएँ। महंतस्वामी के सामने कुछ बात हुई होगी। उस समय हम तो छोटे थे। लेकिन, ईश्वरचरणस्वामी, नारायणभगत, कोठारीस्वामी वगैरह ने प्रोग्राम बनाया। बापा से इसकी एप्रुवल भी मंगवा ली और हम सभी वह प्रोग्राम देखने के लिए गए। देख कर वापिस आए। इसके दो-चार दिन के बाद बापा मुंबई आए थे या आने वाले थे। उन्होंने हमें आज्ञा दी – आप सब चिन्मयानंद के प्रोग्राम में गए थे! वहाँ लेडिज़ भी होंगी, तो अब कल सभी एक-एक व्रत करना। व्रत की बात आए, तो मैं ढीला ही हो जाता। मेरे मन में विचार उठा कि डॉक्टरस्वामी और सबने पूछ कर ही वह प्रोग्राम बनाया था, फिर भी बापा ने व्रत दे दिया! व्रत करने के गम में तो डूबे हुए थे ही कि अगले दिन पप्पाजी मंदिर में आए। सुबह वचनामृत समझाने के लिए बाई टर्न वे आते रहते थे। सभा पूरी होने के बाद पप्पाजी नीचे हम सबसे मिलने के लिए आते थे। मेरी ओर देख कर एकदम बोले – *राजा! चिन्मयानंद का लड्डू खाया न!* अंदर वैसे भी एक संताप था, उसमें पप्पाजी ने चुटकी ली कि *चिन्मयानंद के यहाँ जाकर लड्डू खाया न!* मैंने ऊपर-ऊपर से बचाव करते हुए कहा – *वहाँ लेडिज़ थी, इसलिए बापा ने हमें व्रत दिया।* तब वे बोले – *तुम में से किसी की भी नज़र लेडिज़ की ओर गई होगी क्या?*

उसका व्रत कैसे? क्या लड्डू खाने के लिए वहाँ गए थे? बापा के अलावा तुम्हें उनका प्रभाव क्यों पड़ा? मुझे उस समय सच में ऐसा लगा था कि अपनी समझ का ही झंडा ऊँचा रखने के लिए वे यह बात करते हैं। यह बात तब तो बापा ने भी की ही होगी, लेकिन वर्षों के बाद 'योगावाणी' छपी उसमें पेज नंबर 20 की 20वीं बात में लिखा है – ***फलां साधु बहुत अच्छा है, ऐसा भी गुण अंदर आ जाए, तो समझना कि तुम्हारी वृत्ति तुम्हें मिले संत के प्रति गौण हुई।*** यूँ पप्पाजी की बात तो सच्ची ही थी। मूल रहस्य यह कि हम वहाँ क्यों गए थे। लेकिन, अभी भी हम यही करते हैं –

'क्या उसकी ऑरेटरी है? स्पेलबाउन्ड कर डाले! क्या उसका तप! क्या उसकी भक्ति!'

हम पर ऐसे कई प्रभाव पड़ ही जाते हैं। सच में **यदि पक्की निष्ठा हो - लगाव हो, जैसी बापा कहते थे, तो यह न हो।**

...मुझे याद है, मल्कानी नए - नए हमारे कॉन्टेक्ट में आए थे। तो, पहले एक बार उन्होंने मुझसे कहा कि *जब आप मंदिर का भूमिपूजन करोगे, तब रामकिंकरजी को बुला कर रामायण की कथा करवाएँगे।* इसलिए, जब मुहूर्त करने का समय आया, तब मैंने मल्कानी से कहा कि *मल्कानी, आप कह रहे थे कि रामकिंकरजी को बुलाना है, तो आप उसकी पैरवी शुरू कर देना।* लेकिन, तब वे बोले – *रामकिंकरजी को क्यों बुलाना है! स्वामिजी आने वाले हैं, साहेब आने वाले हैं, पप्पाजी आने वाले हैं, तो रामकिंकरजी को क्यों बुलाने?* ऐसे नए आने वाले भी हमें यह सीख देते हैं। लेकिन, हमें शायद मायिकभाव होगा तभी तो उन बातों को अभी भी पकड़ते नहीं। काकाजी तो कहते थे कि *तुम्हें इस रास्ते पर चलना ही नहीं है।* महंतस्वामी ने एक बढ़िया बात की है – ***जो भी बातें की हैं – ऐसा यदि करेंगे, तो होगा ही।*** अर्थात् बड़े पुरुष जो बातें करते हैं, उन पर हम यदि अमल करेंगे, तो होंगी ही। लेकिन हमारा 'स्लोगन' अलग है – ***'जितना होगा, उतना करेंगे।'*** फिर तो उसका कोई उपाय ही नहीं।

सो, प्रवीणभाई के पेरिस मंडल के उदाहरण से हम इतना तो सीख ही जाएँ कि हमें अब इस रास्ते पर चलना ही है। हमें कैसे पुरूष मिले? उन्हें धारे हुए साहेब, स्वामिजी - सभी यहाँ बैठे हैं। अभी भी वह मौका वैसे का वैसा ही है। लेकिन वे जो बात करते हैं, उसमें कोई भी शंका किए बिना, वे जो कहते हैं वह सच है – ऐसा मानें।

हम संबंध की बात करते हैं, ऐसे ही संबंध की एक बात हुई थी। अक्षरभुवन में शिवलाल सेठ के एक प्रसंग की बात निकली थी। हर्षदभाई बैठे हुए थे; काकाजी, पप्पाजी थे और मैं बैठा था। हर्षदभाई से मैं गीता सीखता था, इसलिए वहाँ बैठा था। तो, हमें देख कर काकाजी और पप्पाजी भी वहाँ बैठ गए। फिर बात - बात में शिवलाल सेठ का प्रसंग निकला। सभा के लिए मंदिर आते हुए शिवलाल सेठ को थोड़ी देर हुई होगी। स्वामी ने पूछा कि *कहाँ गए थे?* तो वे बोले – *मंदिर में रसोई की सेवा के लिए एक सौदा करके नकद लेकर आने में देरी हुई।* जो मुनाफा हुआ था, उसे वे घर नहीं लेकर गए थे, मंदिर में ही दिया है। मंदिर के काम के लिए ही डील की थी। तब भी स्वामी ने उसे डाँटा कि *भूसे का सौदा करने का मन होता है?* मैंने सहज ही पूछा – *काकाजी, इसमें उसने क्या गलत किया? सौदा करके पैसा मंदिर में ही तो दिया; और वो तो मंदिर का ही ममत्व कहा जाए न?* तब हर्षदभाई बोले – *'सात्त्विक अहम्' बीच में आ गया।* काकाजी-पप्पाजी तब तो कुछ बोले नहीं।

फिर काकाजी ने मुझसे कहा कि *वे कह रहे थे न कि 'सात्त्विक अहम्' बीच में आ गया; सात्त्विक अहम् - बहम् कुछ आड़े नहीं आया था, लेकिन गुणातीतानंदस्वामी के साथ के संबंध में सेठ को जो फर्क पड़ गया था उसके बारे में स्वामी ने उसे सचेत किया था।* शिवलाल सेठ को स्वामी के साथ पहले खूब लगाव था, लेकिन गढडा वालों के संबंध के कारण, उनके शब्दों से उसके लगाव में थोड़ी कमी आ गई थी। पहले तो स्वामी बैठे होते, और उन्हें यदि कोई काम नहीं होता, तो स्वामी के पास आ जाते। यह फांसला पड़ गया, उसके विषय में स्वामी सचेत करना चाहते थे और तभी तो स्वामी ने कहा कि *ऐसी ही बातें छः महीने तक करूँगा, तब भीतर में आधा सत्संग जो बचा हुआ है वह पूरा होगा।* यह भी कितनी टेक्नीकल बात है। 'आधे सत्संग' का अर्थ यह कि मैं बैठा हूँ, इसलिए अभी फिर से सब ठीक हो जाएगा और तुम्हें दोबारा पूरा सत्संग हो जाएगा। 'आधा कुसंग' शब्द प्रयोग नहीं किया। एक जगह वचनामृत में 'उसे आधा कुसंगी समझना' ऐसा बोला है। मतलब अब कुसंग की ओर ही अग्रसर रहोगे, रिट्रीट होने का कोई चान्स नहीं।

मेरा इतना ही कहना है कि ऐसे सभी रहस्य देने वाले पुरुष अभी भी बैठे हैं; उनके भरोसे हम अंधी दौड़ लगा दें। कई बार विचार आता है कि – ऐसे तो काकाजी थे, वे तो पप्पाजी थे, लेकिन आख़िर इतना तो मानें कि इन सब पर कन्ट्रोलिंग भी उनका ही है। तो, हमारी खातिर भी वे इन्हें कहीं मिसलीड नहीं होने देंगे। यूँ ऐसी धाम, धामी और मुक्तों की निष्ठा पक्की करके हम यहाँ से जाएँ इतनी ही प्रार्थना। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. शांतिभाई (मोगरी)

...रहस्य की बातें हो रही हैं। आत्मा के अनुलक्ष की बातें हो रही हैं। **जीव का सत्संग दृढ़ करने की बातें हो रही हैं... उपासना की बात अगर समझ जाएँगे, तो हमारे सभी दोष टल जाएँगे।** गुरुजी ने रहस्य की बहुत बारीक-बारीक बातें की हैं –

* बड़े पुरुष के प्रति संपूर्ण दिव्यभाव!
* उनके वचन में पूरी श्रद्धा!
* वे कल्याणकारी ही हैं और हमारा हित कर रहे हैं – ऐसा पूर्ण विश्वास!

मायिकभाव से ऊपर उठ कर संपूर्ण दिव्यभाव दृढ़ करने के लिए ऐसे सारे उत्सव मनाए जाते हैं। काकाजी के साथ बैठते थे, तो काकाजी कहते कि चलो पाँच मिनिट धुन कर लें। आँख बंद करके वे धुन शुरू करते। पाँच मिनिट, दस मिनिट, पंद्रह मिनिट, बीस मिनिट, तीस मिनिट, पैंतालीस मिनिट, घंटों तक... एक भक्त ने पूछा – काकाजी, आप पाँच मिनिट की कह कर घंटों तक खींचते हैं। तब काकाजी पूछते –

एक घंटे में तुमने कितनी देर धुन की। पाँच मिनिट भी नहीं हुई होगी। तुम लोग मेरे कहने पर पाँच मिनिट अच्छी तरह धुन करो, तो जय बुलवा दें। तुम्हारा मन तो कहीं और घूमता रहता है।

बड़े पुरुष हमें कितना संभालते हैं। हमारा मन मना करे, तो भी जबरदस्ती भजन और प्रार्थना करवाते हैं।

बापा ने 1964 में साहेबजी का काकाजी से परिचय करवाया। काकाजी के हाथ में साहेब का हाथ रखा और कहा कि इन युवकों का कार्य आप संभालो। उस दिन से काकाजी ने साहेबजी का हाथ संभाला-पकड़ा और साहेबजी ने काकाजी का पूरे दिव्यभाव से स्वीकार किया। योगीजी महाराज जैसा भाव ही काकाजी में दृढ़ किया। तीन-चार साल के बाद विद्यानगर में रहने आना हुआ। तब काकाजी ने उनसे (साहेब) कहा कि अब आपको पप्पाजी के पास रखा है, तो उनकी आज्ञा में रहना। उस दिन से साहेबजी पप्पाजी की आज्ञा में रहे और इससे भी अधिक, जिन्हें साहेबजी के प्रति दिव्यभाव था-प्रीति थी, उन सभी को काकाजी और पप्पाजी में उतना ही भाव! आज भी साहेब के मन में काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, प्रमुखस्वामिजी और महंतस्वामिजी में वैसा ही परमभाव, दिव्यभाव, सभी के प्रति स्वरूप का भाव दृढ़ है व सभी संबंध में आने वालों को भी करवाया है। **आध्यात्मिकता में यह बहुत बड़ी बात है... उनके संबंध वाले के प्रति भी वैसा ही दिव्यभाव!**

...संबंध वालों के प्रति दिव्यभाव रख कर सभी के दर्शन करें, ऐसी परम स्थिति पाने के लिए सतत आलोच रखें, भजन-प्रार्थना का बल रखें, इसके लिए ऐसे उत्सव बल देते हैं। काकाजी और पप्पाजी की शताब्दी मनाई जा रही है, तब हम उन्हें क्या अर्घ्य दें? श्रीजी महाराज प्रगट हुए और गुणातीत को भी साथ में लाए! भगतजी महाराज, जागास्वामी, अदाश्री, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज ने जो कार्य किया, उस कार्य को हमारे जीव में दृढ़ करने के लिए संकल्प करें। ऐसा जीवन जीकर बताएँ। साहेबजी से हमारे मनोजभाई ने एक प्रश्न पूछा– *साहेबजी, आपका कार्य अब क्या? आपके जीवन का उद्देश्य क्या?*
वे बोले– *शास्त्रीजी महाराज व योगीजी महाराज ने उपासना का जो कार्य किया है, उसका विस्तार करना।*
सभी को उस मार्ग पर चलने का बल मिले, ऐसा संकल्प करके सभी को इस मार्ग पर सतत चलाना हमारे जीवन का उद्देश्य है।

इस कार्य को समझ कर काकाजी और पप्पाजी इस ब्रह्मांड में पधारे। तो, इस भाव में सतत जीते हुए, श्रीजी महाराज की सर्वोपरिता का स्वीकार करें और प्रत्यक्ष स्वरूप के प्रति प्रत्यक्षता का निश्चय दृढ़ करके उनमें संपूर्ण रूप से मन, बुद्धि, चित्त, अहम् को याहोम कर दें–ऐसा हम सबको बल मिले, यही प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई

...आज का पेरिस का यह समैया हम सबका गोल नहीं है। यह तो शुरुआत है। 2014 के अंत में स्वामिजी का 'आत्मीय युवा महोत्सव' आ रहा है। 2015 में साहेब दादा का 'अमृतपर्व' आ रहा है। 2016 में पप्पाजी का 'शताब्दी महोत्सव' आ रहा है और 2017 में काकाजी और पप्पाजी महाराज का महोत्सव इकट्ठा मनाएँगे–यह हमारा गोल है। उससे भी आगे, **हम रोज, हर पल ऐसा जीवन जी सकें, ताकि हमारा यह महोत्सव कायम (चिरंजीव) हो जाए**–यह हमारा गोल है। **काकाजी कहा करते थे कि फर्स्ट स्टॅप इन धी राइट डायरेक्शन, इझ धी लास्ट स्टेप। हमारा पहला पाँव राइट डायरेक्शन में जाएगा, तो हमारी स्टीमर मुंबई के बदले पोरबंदर नहीं पहुंचेगी, मुंबई ही पहुंचेगी। थोड़ा-सा भी फर्क पड़ गया, तो सारी बाजी हार जाएँगे।** इसलिए प्रार्थना करनी है कि ये जो आने वाले प्रसंग हैं, सब बढ़िया होते जाएं। गुरुजी ने दिल

खोलकर बताया कि 2 साल पहले दिल्ली में बहुत भव्य समैया हुआ था, वह समैया बहुत भव्य था। लेकिन गुरुजी कहना चाहते हैं कि जो भी होता है, पहले से बढ़ कर ही होता रहता है। क्योंकि फर्स्ट स्टेप इज़ इन धी राइट डायरेक्शन। हमारा पहला कदम राइट डायरेक्शन में होगा, तो बाकी सब चिंता महाराज और गुणातीत स्वरूपों की है।

सबको यह पता नहीं होगा कि काकाजी और पप्पाजी की शताब्दी एक साथ मनाने का निर्णय पेरिस में कैसे लिया गया, और क्यों लिया गया।

...लास्ट इयर पवई में चौमासे के दिनों में एक महीना काकाजी के सब प्रसंगों की पारायण हुई थी। तब हमारे पप्पाजी के आशीर्वाद से हंसा दीदी और बहनों द्वारा लिखी 'दिनकरनो प्रकाश पुंज' पुस्तक की वशीभाई, भरतभाई एवं साथियों ने रिसर्च करके एक महीने तक पारायण की थी। वशीभाई और भरतभाई के आग्रह से उसके अंतिम हफ्ते में हमारे प्रवीणभाई पेरिस से वहां पहुंचे थे। बाहर मूसलधार बारिश हो रही थी और अंदर भी ऐसा माहौल था। वशीभाई और भरतभाई बहुत प्यार से काकाजी और पप्पाजी की महिमा गा रहे थे, यह देख कर सर्वदेशीय पुरुष प्रवीणभाई के दिल में विचार आया– पप्पाजी का बर्थडे 2016 में है और काकाजी का 2018 में आ रहा है; तो अलग-अलग करने के बजाय हम इकट्ठे मिलकर ऐसे दिव्य गुणातीत पुरुषों का एक समैया क्यों न करें? हमारे वशीभाई, भरतभाई और हमने भी शिकागो में सुना, फिर मैंने बापु से बात की। उन्हें भी यह बात बहुत अच्छी लगी। सो, उन्होंने कहा कि हम यदि यह शुरू करने वाले हैं, तो प्रवीणभाई को यह बात क्यों न बताएं? उनमें से ही यह विचार आया है, तो पेरिस से शुरुआत क्यों न करें? बापु में से आता है, तो प्रवीणभाई 'हाँ' कर देते हैं। क्योंकि यहाँ जो समाज है, उसके रुट-नींव में बापु का हर साल 2-2 महीने, ढाई-ढाई महीने यहाँ आने का तप है, वही आज बोल रहा है।

यहाँ ऐसी कोई व्यवस्था नहीं थी... प्रवीणभाई की खुल्ली गाड़ी में प्रवीणभाई और बापु ने जा-जाकर यह सारा समैया आयोजित किया है। यहाँ मोरेशियस के भी हरिभक्त बैठे हैं। मोरेशियस फ्रेंच कॉलोनी का एक टापू है... प्रवीणभाई और बापु के संबंध से आज मोरेशियस के हरिभक्त भी 'स्वामिनारायण' का नारा लगाते हुए आए हैं। यह नया समाज है। काकाजी बार-बार कहते थे–गुजरात के अंदर स्वामिनारायण के हमने बहुत टुकड़े कर दिए हैं। हरेक का मंदिर अलग, हरेक की संस्था अलग, हरेक का ओपिनियन अलग। अब हम बाहर जाना चाहते हैं, जहाँ कोरी स्लेट हो। कोरी स्लेट के अंदर जो भी अच्छा ज्ञान देंगे, वो पक्का हो जायेगा। उधर खींचातानी नहीं होगी। आज साहेबदादा, स्वामिजी, प्रमुखस्वामी महाराज और अन्य सब संत हमारा स्वामिनारायण का सत्संग अच्छी तरह बढ़ा रहे हैं...

आज महापूजा से पहले कई हरिभक्तों ने मेरे पास आकर प्रार्थना की थी और अन्यों के पास भी की होगी। प्रार्थना भी व्यावहारिक है... **हमें बस प्रार्थना करनी है, करने वाले तो प्रभु हैं। हम सब तो केवल निमित्त हैं। प्रभु जो करें, वो हमें मान्य करना पड़ेगा।** उसे **'ओपन प्रेयर'** कहते हैं, नहीं तो वो **'क्लोज़्ड प्रेयर'** हो जाएगी... **उसमें से भी सत्संग की ओर प्रगति हो जाएगी। भगवान के साथ हमारा ज़्यादा लगाव हो जाएगा...**

13 अगस्त, 2013 सायं – 'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव', पेरिस

*[**प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी** के निम्न आशीर्वाद इनके अभिप्राय से भरपूर हैं, क्योंकि इसमें उन्होंने 37 बार **संप - सुहृद्भाव - एकता**, 38 बार **संकल्प - क्रिया - भाव**, 13 बार **मोहताज़** और 11 बार **खींचातानी** शब्दों को दोहराया है। बाह्यदृष्टि से भले ही कोई सोच ले कि उम्र के तकाजे के कारण काफी समय से प.पू. स्वामिजी एक ही बात कई बार दोहराते हैं। परंतु, हाल ही में 5 जनवरी 2014 के शुभ दिन गुजरात के 'धनसुरा' में प.पू. स्वामिजी ने अपने प्राकट्योत्सव पर तकरीबन पौना घंटा अपनी परावाणी का लाभ दिया। इस दौरान उन्होंने कोई भी बात दोहराई नहीं और उनकी आवाज़ भी पहले की भाँति खूब बुलंद थी–ऐसा सभी ने महसूस किया। **प.पू. गुरुजी** ने खूब आनंद व्यक्त करते हुए अगले ही दिन हरिधाम पू. योगीस्वामी एवं पू. पवित्रभाई से फोन पर कहा भी–*

'कल स्वामिजी के टी.वी. पर दर्शन कर व उनके आशीर्वाद रूप परावाणी सुन कर हम सभी खुश आनंदविभोर हो गए। मानो स्वामी ने भारी चमत्कार दिखा दिया! हमने तो यहाँ आइसक्रीम पार्टी की!'

*दरअसल, पेरिस के निम्न आशीर्दान में **प.पू. स्वामिजी ने ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी के हार्द, उनकी रुचि और अभिप्राय का दर्शन कराया है।** साथ ही साथ, **'खींचातानी' शब्द के द्वारा सावधान भी किया कि हमें किस दिशा में नहीं जाना है।** सो, प.पू. स्वामिजी के इस आशीर्वचन के एक-एक वाक्य के मर्म को समझते हुए उनके प्राकट्य पर्व की फलश्रुति पाएँ...]*

प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी (हरिधाम)

अद्‌भुत दर्शन सभी बच्चों ने करवाया। भगवान स्वामिनारायण की परंपरा अभी जीवंत है। शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज ने जिन दोनों भाइयों का – **काकाजी व पप्पाजी** का अद्‌भुत सर्जन किया, **उन्हीं के बलिदानों के फलस्वरूप समग्र गुणातीत समाज खिला... किसी भी तरह, कैसे भी संजोगों में उन्होंने हमें पाला-पोसा और बड़ा किया।**

काकाजी ने संप, सुहृद्भाव और एकता का संदेश व्यापक बनाया। पप्पाजी ने संकल्प, क्रिया और भाव से सेवन करने की बात समाज में ज़ाहिर की। दोनों भाइयों के अद्‌भुत परिश्रम के फलस्वरूप गुणातीत समाज अभी भी खिला हुआ है और खिला रहेगा। **संतों, बहनों, भाइयों–हम सभी का फर्ज़ बनता है कि किसी भी तरह, किसी भी संजोग में दोनों भाइयों के परिश्रम को सफल करें। साहेब, स्वामिजी, निर्मलस्वामिजी हम सभी साथ हैं। इसके लिए दिनकरभाई, गुरुजी, निर्मलस्वामिजी भी इकट्‌ठे होकर एक रुचि, एक दिल, एक भाव से काकाजी की ओर नज़र रख कर सुंदर उठाव लें। काकाजी-पप्पाजी जैसे सनातन चैतन्य स्वरूप जाते ही नहीं हैं।** हम सभी को जब बहुत बड़ी जिम्मेदारी मिली है, तब काकाजी-पप्पाजी के चरणों में इतनी ही प्रार्थना करें कि हम किसी भी संजोग में उनके मार्ग से दूर न जाएँ। बापा द्वारा प्रवर्ताया संप, सुहृद्भाव और एकता का मार्ग काकाजी-पप्पाजी दोनों भाइयों ने अद्‌भुत रीति से आत्मसात् किया... **हम सभी को दोनों भाइयों की छत्रछाया में जीने का सुअवसर मिला, यह हमारा बहुत बड़ा भाग्य है।**

अंतर की गहराई से कहता हूँ– **काकाजी-पप्पाजी हमें जिम्मेदारी सौंप कर गए हैं।** काकाजी ने संप, सुहृद्‌भाव, एकता की सुंदर बात पकड़ी और बताया कि आत्मीयता से दौड़ो। पप्पाजी ने बताया कि संकल्प, भाव और क्रिया से सेवन करो। **दोनों भाइयों का भाव व जीवनशैली एक ही मार्ग पर ले जाती थी कि शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज किसी भी प्रकार राजी हों... इस मार्ग में कभी, कभी, कभी, किंचित्, किंचित्, किंचित् खोट न आने दें...** महाराज, स्वामी, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी के चरणारविंद में एक ही प्रार्थना है कि हमें ऐसा बुद्धियोग देना, जिसके फलस्वरूप **गुणातीत समाज की आत्मीयता उत्तरोतर बढ़ती जाए, बढ़ती जाए।** आपके हृदय को रंचमात्र, रंचमात्र दुःख न पहुँचाएँ... सारे समाज को क्या करना है, यह दोनों ने अपने जीवन से खूब अच्छा ख्याल दिया। मैं, साहेब, अक्षरविहारीस्वामिजी, निर्मलस्वामिजी, भरत, वशी, दिनकरभाई सभी इकट्‌ठे होकर चिदाकाश की आत्मीयता से एक रुचि से दौड़ते रहें, दौड़ते रहें। आप सबको एक ही बात करनी है। **काकाजी-पप्पाजी जैसे पुरुषों के चरणारविंद में किसी भी प्रकार स्थान ले लेना है...** हम सभी के लिए शास्त्रीजी महाराज व योगीजी महाराज ने काकाजी, पप्पाजी के रूप में इतने सुंदर पात्र धरती पर भेजे हैं। दिनकरभाई धरती पर अद्‌भुत, अद्‌भुत हैं। भरत, वशी अद्‌भुत-सुंदर रीति से गुणातीत भावना का दर्शन करवा रहे हैं... पप्पाजी ने बहनों का कितना बड़ा आश्रम स्थापित किया है। तीन सौ-साढ़े तीन सौ बहनों के एक आश्रम में रहने के बावजूद बर्तन बजे नहीं ! गुरुजी को भी कोई स्वार्थ नहीं है। ये भुल्के समाज की अच्छी सेवा कर रहे हैं। हम सबका यही फर्ज़ है कि **किसी भी प्रकार, कैसे भी संजोग में, ऐसे दिव्य भुल्कों को कभी भी मोहताज़ न करें...** हमें इतना ही पकड़ना है कि कभी मोहताज़ नहीं करना। **हम सभी की ओर से इनके हृदय को किसी भी प्रकार का, किंचित् दर्द न पहुँचे।** वे दोनों पुरुष जिस प्रकार जी गए, उसकी ओर नज़र रहे। दोनों की रीति अलग थी, फिर भी एक थी... सभी अच्छा उठाव ले रहे हैं, उसमें हमें साथ देना है... **जहाँ संबंध और लगाव हो, हमें वहाँ दौड़ते रहना है, दौड़ते रहना है... संबंध बाँध कर ही मरना और जीना है**– इतना ध्यान रखना। आज मैं इन बच्चों को कब से देख रहा था। विविध प्रकार के कार्यक्रम एक या दूसरी तरह प्रस्तुत किए। हमें खूब आनंद हुआ। **आप सबके आनंद में मेरा आनंद है।**

...दिनकरभाई संबंध के लिए उठाव लेंगे, साहेब भी संबंध बाँधने के लिए उठाव लेंगे। न तो दिनकरभाई को स्वार्थ है, न ही साहेब या भरतभाई, किसी को कोई स्वार्थ है। **एक ही स्वार्थ है – अखंड दृष्टि-नज़र में रहे कि काकाजी-पप्पाजी राजी हों, इस प्रकार ही दौड़ा करें।** समग्र गुणातीत समाज में हम यह दृढ़ ठहराव करें...

✳ किसी भी प्रकार की खींचतान के बिना, हम सब एक जुट हों।

✳ एक-दूसरे को देख कर खूब आनंद हो।

✳ एक-दूसरे को देख कर झुकने का मन हो।

✳ एक-दूसरे को देख कर ज़ीरो होने का मन हो।

...ऐसी भावना से ये सब परिश्रम कर रहे हैं। **दिनकरभाई या भरत-वशी** की तरफ देखें तो कैसे भी किसी भी संजोग में उनका 'दासत्व' कभी जाता नहीं।

एक बात है – 'निजात्मानं ब्रह्मरूपम्'। भगवान स्वामिनारायण ने दो मार्ग दिए। एक–ब्रह्मभाव से भजन करो। दूसरा–दास का दास होकर जो रहे सत्संग में... उस मार्ग पर चलो। समझदारी और ज्ञान वाला ब्रह्मभाव के

मार्ग पर जाए। हेत, विश्वास और दासत्व के अंग वाला दास का दास होकर जिए... प्रभु ने कितनी अच्छी बात कही! दास का दास होकर जो रहेगा सत्संग में, भक्ति उसकी अच्छी मान कर राचूंगा उसके रंग में... **रात को लेखा-जोखा निकालने की जीवनशैली बनाना... दोनों मार्ग अलग हैं; उसमें आपस में भिड़ना नहीं...** सभी अलग-अलग अंग वाले बैठे हैं। सभी को महाराज के पास ही जाना है... आपसी प्रेम, आत्मीयता में कभी खोट न आए। **गुणातीत समाज की जो आत्मीयता, काकाजी-पप्पाजी स्थापित करके गए, हमें दोनों का ऋण अदा करना है।** उन्होंने हमारे लिए खूब परिश्रम किया है... किसी भी तरह, किसी भी संजोग में काकाजी और पप्पाजी की नज़र में हमें रहना है। **यह मुझे और आपको - किसी को भी भूलना नहीं है...** गुणातीत समाज के संबंध में आया हुआ प्रत्येक व्यक्ति बहुत बड़ा है... साहेब का हेत (लगाव) का अंग है, मेरा थोड़ा बुद्धि का अंग है। अंतिम लक्ष्य यही है कि तू राजी हो। दिनकरभाई का अंतिम लक्ष्य भी यही है। जब ऐसे प्रभाव में जीवन जीने वाले पुरुष यहाँ बैठे हैं, हमारे मार्गदर्शक हैं, हमारे आधार हैं, हमारे प्राणसमान हैं, तो उनके साथ मैत्री करके हम आगे बढ़ते ही जाएँ, बढ़ते ही जाएँ, बढ़ते ही जाएँ। संबंध बढ़ाते ही रहो, बढ़ाते ही रहो। **जैसे-जैसे संबंध बंधता जाएगा, वैसे-वैसे बुरे विचारों की पूर्णाहुति होगी। मेरा-तेरा, खींचातानी की पूर्णाहुति होगी। शुभ विचार प्रगटेंगे। चिंतारहित जीवन प्रगटेगा।** काकाजी और पप्पाजी का जीवन देखना, 'एग्री ओरियन्ट' जली, तब किसी भी प्रकार की चिंता नहीं थी। भयंकर अग्नि के समान परीक्षा हो गई। दोनों भाई भजन करते ही रहे और करवाते रहे। यह हम सबने देखा है। **कैसा जीवन वे जी गए – यह हमने देखा है। उनकी क्या रुचि है, यह हमें पता है...**

मैं उनका समागम करने के लिए जाता था। दोनों का दर्शन करता था। काकाजी का लाभ लेता था; जब वे आराम में जाते तो वहाँ बैठे पप्पाजी का लाभ लेता था। **दोनों भाइयों का मार्ग अलग था, लेकिन दोनों की आत्मीयता अद्‌भुत थी...** वे अद्‌भुत रीत से सेवन करते हैं। ध्येय एक ही – 'तू राजी हो...' भरत और वशी काकाजी की गोद में पले। तब भी मुझे उनके साथ इतनी प्रीति, इतनी प्रीति... काकाजी उनके ऊपर निजी अधिकार रखते थे। टोकते, डाँटते भी थे। अच्छी तरह उन्हें तैयार किया। पप्पाजी ने बहनों को अपनी रीत से तैयार किया। **काकाजी-पप्पाजी के अद्‌भुत परिश्रम से एक समाज पुलकित है।** जो दौड़ता रहा है और दौड़ रहा है। दासत्व से सब दौड़ते हैं। सभी की भावना एक ही है कि संबंध बंधे... मैं साहेब, दिनकरभाई, भरत, वशी की ओर देखता हूँ, तो खूब आनंद आता है। कभी भी अलगाव नहीं लगा। कोई बड़े-छोटे का प्रभाव नहीं है। संबंध से जीते हैं, संबंध से काकाजी को राजी करने का अद्‌भुत परिश्रम। **मेरे लिए, साहेब के लिए या निर्मलस्वामी के लिए काकाजी बहुत परिश्रम करते ही रहे!** किसी भी मत्थापच्ची में पड़े बिना हम सभी दौड़ते ही रहें, आत्मीयता बढ़ाते ही रहें। किसी भी प्रकार से संबंध बाँधना है। प्रथम 27 का पहला अनुच्छेद पढ़ना। 'जिसकी ऐसी समझ हो...', उसमें भगवान सर्व प्रकार से निवास करके रहते हैं! यही बात 37 में महाराज ने अलग प्रकार से बताई। यही बात 62 में अलग प्रकार से की। 27, 37, जेतलपुर 4 और 5 ये 'कर्ताहर्ता' के वचनामृत हैं। निष्ठा पक्की करें - जिसे जिसके साथ लगाव हो। पर, यह बात ज़्यादा पक्की करनी पड़ेगी... जिसके फलस्वरूप इन गुणातीत पुरुषों को हमारे द्वारा एकधारी अंतर में शांति रहे...

(शेष अगले अंक में...)

बड़े घर दिवाली शिविर – 2013

संबंध में आए मुक्त किसी भी प्रकार सत्संग से जुड़े रहें, इस हेतु ही गुणातीत पुरुष सतत उद्यम करते रहते हैं।

अगस्त महीने के अंत में प.पू. गुरुजी मुक्तों के साथ **'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव'** मना कर युरोप की यात्रा से लौटे। तत्पश्चात्, पिछले वर्ष ही संपर्क में आए गर्ग परिवार की भावना के वश, प.पू. गुरुजी तकरीबन सौ मुक्तों के साथ **29 सिंतबर से 4 अक्तुबर** तक **'आनंदोब्रह्म शिविर'** करने हेतु मसूरी के 'रॉयल ऑर्चिड फोर्ट रिसोर्ट' गए। शिविर के दौरान एक दिन ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की प्रासादिक भूमि सहस्त्रधारा में 'महापूजा' करवाई। सहस्त्रधारा के जल का तीर्थत्व सजीवन करने हेतु, मुक्तों के साथ प.पू. गुरुजी ने वहाँ धुन की और प्रसादी का जल सभी पर छिड़का। रिसोर्ट में रोज सायं शिविर की सभा में, प.पू. गुरुजी ने श्रीजी महाराज के प्रसंग पढ़वाए और एक सायं 'बॅप्स' द्वारा प्रस्तुत 'भगवान स्वामिनारायण' मूवी दिखा कर कई नए मुक्तों को भगवान स्वामिनारायण की जीवनलीला एवं कार्यों का संक्षिप्त परिचय करवाया और... 4 अक्तुबर की रात्रि को सभी दिल्ली वापिस आए।

दिल्ली लौटने के बाद सहज ही **'बड़े घर दीवाली शिविर'** का अनुसंधान रहा कि अब अमदावाद-मुंबई से हमारा परिवार 'वाघबारस' तक आ जाएगा और हम सभी मिल कर शिविर में, प.पू. गुरुजी की निश्रा में, मंगलकारी दिनों को हर्षोल्लास से मनाएँगे। **31 अक्तुबर – वाघबारस** का वो शुभ दिन भी आ गया, जब राजधानी ट्रेन से अमदावाद के तकरीबन 22 मुक्त सुबह 7:30 बजे तक ताड़देव मंदिर पहुँच गए। शीघ्र ही नित्यविधि करके सभी तैयार हो गए। और... दिल्ली से एक घंटे की दूरी पर **'तुलीप एपार्टमेंट्स'** में जाकर बसे पुराने जोगी **प.भ. कीर्तिभाई जानी** एवं **प.भ. सुशील भास्करजी** के घर दीवाली के निमित्त पधरामनी के लिए जा रहे प.पू. गुरुजी के संग गए। दोपहर को **मुरथल** में **'सुनील ढाबा'** पर **प.भ. श्यामसुंदरजी** द्वारा खूब भावना से परोसा हुआ प्रसाद लेकर सायं 6:00 बजे दिल्ली मंदिर लौटे। पर, दिनभर की थकान के कारण प.पू. गुरुजी ने उस दिन शिविर की शुरुआत नहीं की।

1 नवम्बर – धनत्रयोदशी की सायं 4:40 से 6:00 'कल्पवृक्ष' हॉल में प.पू. गुरुजी की निश्रा में 'लक्ष्मीपूजा' निमित्त महापूजा के साथ 'बड़े घर दीवाली शिविर' का प्रारंभ हुआ। भगवान स्वामिनारायण एवं उनके प्रगट स्वरूपों के रूप में हमें जो भव्य प्राप्ति हुई है और उनके संबंध से हमें जो निश्चिंतता मिली है, उसकी झांकी कराते हुए प.पू. गुरुजी ने 'श्रीजी चरित्र विहार' एवं 'गुरुहरि योगीजी महाराज की सत्संग कथाओं' पुस्तक में से कुछ प्रसंग पढ़वाए।

2 नवंबर – अक्षरचौदस की सायं सभा हुई। **3 नवंबर – दीवाली** सायं 6:00 से 7:45 'शारदापूजन' निमित्त महापूजा होने के बाद सभा हुई। **4 नवंबर – अन्नकूटोत्सव, नूतन वर्ष** निमित्त सुबह की सभा में प.पू. गुरुजी का आशीर्वाद पाकर सभी धन्य हुए। **5 नवंबर – भैयादूज** की दोपहर को प्रति वर्ष की भाँति **प.भ. विजयपालजी** के घर श्री ठाकुरजी का थाल किया और सायं शिविर की सभा हुई। **6 नवंबर** की

सायं भी सभी ने शिविर का लाभ लिया। **7 नवंबर – लाभपंचमी** की सायं सभी भक्त दिल्ली मंदिर के निजी और निष्ठावान प.भ. विनोदभाई ठक्कर के सुपुत्र प.भ. सागर की शादी में शामिल होने के लिए प.पू. गुरुजी के साथ गए। कई मुक्त तो अगले ही दिन अमदावाद - मुंबई के लिए रवाना हो गए, किन्तु कुछ मुक्त **13 नवंबर – प्रबोधिनी एकादशी, हाटोत्सव** की अनूठी स्मृतियाँ संजो कर वापिस गए।

✡✡✡

अन्नकूट कृपाप्रसाद

...**गर्ग साहब** ने बहुत अच्छे तरीके से यहां की वर्किंग को समझाया... मैं गर्ग साहेब से कहूँगा कि अपना कारोबार छोड़ कर नहीं, पर **जब भी टाइम हो तो आप आते रहिएगा। फायदा आपको ही होना है।** महाराज ने स्वामिनारायण संप्रदाय की स्थापना आम धर्म प्रचार के लिए नहीं की ; यह धर्म प्यॉर स्पिरीच्युअल है। स्वामिनारायण संप्रदाय में दो हेड (मुखिया) होते हैं। एक मॅनेजरियल-ऑरगेनाइजिंग हेड, दूसरा स्पिरीच्युअल हेड होता है। स्टेटस वाईज़ ऑरगेनाइजिंग हेड का दर्जा ऊँचा है, क्योंकि बाहर से जो आता है, वह पहले तो उनसे ही मिलेगा। फिर संत के कॉन्टेक्ट में आएगा, आध्यात्मिकता पाएगा। दूसरा – यदि ऐसे संत कारोबर में ही उलझे - एंगेज़्ड रहेंगे, तो सत्संग की बात करने या भगवान का मॅसेज देने के लिए उनके पास टाइम ही नहीं रहेगा। इसलिए कारोबार देखने के लिए 'आचार्य महाराज' बनाए और उन्होंने संतों को फ्री रखा, ताकि भक्त - मुमुक्षु आएँ, तो उनकी परवरिश करते रहें। एक्च्युअली **संतों का काम एक ही है कि जो भी आए उसकी परवरिश करके उसे भगवान के रास्ते पर चलाएँ... साधु का कोई और मक़सद हो ही नहीं सकता।** साधु की यदि .000001% भी अपनी निजी महत्वाकांक्षा होगी, तो वह कल्याण का द्वार नहीं बन पाएगा। इसलिए **साधु को भी खूब सावधान रहने की जरुरत है कि वे जो कुछ कर रहे हैं, वो प्रभु का रास्ता पेव करने के लिए कर रहे हैं या अपनी कोई ख़्वाहिश पूरी करने के लिए कर रहे हैं। सो ही पप्पाजी** कहते थे कि **कोई भी क्रिया करने से पहले छन्नी रखो कि मेरी इस क्रिया से मेरे प्रभु राजी होंगे!** वे कहते, जिससे प्रभु राजी नहीं होते तो भले कितना ही अच्छा काम है, छोड़ दो – इसको नहीं करना है। **यह एक डिसिप्लीन रखनी पड़ती है और ये बात मैंने काकाजी और पप्पाजी में हमेशा देखी कि योगीजी महाराज की मर्जी न हो, ऐसी कोई चीज वे नहीं कर सकते थे।**

गर्ग साहेब इन बहनों के कार्य की खूब प्रशंसा भी कर रहे हैं। काकाजी ने ये क्रांतिकारी काम किया है। एक्चुअली ये कोई नया काम नहीं था। सिर्फ, इट वॉज़ नॉट ऑर्गेनाइज़्ड। बाकी, महाराज के समय में लाडुबा, जीवुबा, रामबाई, रुढ़िबाई ऐसी कितनी बहनें थी, जो भगवान भजती थीं। पर, उनके लिए कोई ऐसा ऑर्गेनाइज़ेशन नहीं हुआ था। बाकी, हर गांव में जहां भी स्वामिनारायण का मंदिर है, वहां हमेशा दो मंदिर होते हैं – एक जनरल मंदिर और एक बाइयों -लेडीज़ का मंदिर – ताकि बहनें इन्डीपेन्डन्ट्ली वहाँ पूजा-पाठ करके, भक्तिमय जीवन गुजार सकें। इसे ऑर्गेनाइज़ करने के लिए योगीजी महाराज ने काकाजी और पप्पाजी महाराज को चुना।

उस समय काफी विरोध भी हुआ। मैं भी एक बार तो विचार में पड़ गया था कि काकाजी ये कर रहे हैं, पर कई सालों से जो शास्त्रीजी महाराज – योगीजी महाराज के साथ जुड़े हुए हैं, वे उनका इतना विरोध कर रहे हैं! कहीं ऐसा तो नहीं कि योगीजी महाराज की मर्जी नहीं होगी। कई इस सोच की भंवर में आ गए। पर, पता नहीं हमेशा महाराज ने यानि योगीजी महाराज कह दो, शास्त्रीजी महाराज कह दो या काकाजी कह दो – उन्होंने हमेशा मेरा फेवर किया है। मेरे साथ यह एक घटना नहीं घटी होती, तो मैं भी इस सोच में फंस जाता; क्योंकि **किसी भी प्रवाह के इन्फ्ल्यूएन्स में आ जाना एक ह्यूमन वीकनेस है।** ऐसा हुआ कि पूर्वाश्रम में मैं 'वसंत विजय मील्स' में जॉब करता था। उसके मॅनेजर पाठक साहेब धार्मिक वृत्ति के थे। उन्हें पता था कि अपने यहां जो लड़का जॉब करता था, वह साधु हुआ है; तो मुझसे मिलने आते रहते थे। यूँ वे योगीजी महाराज के कॉन्टेक्ट में भी आए। फिर, 1965-66 में जब **'गुणातीत ज्योत'** की बहनों को दीक्षा देने की बात हुई, तो उनके कपड़े का रंग सिलॅक्ट करने की बात चली होगी। हम तो साधु बन गए थे और यह हमारा स्फीयर था ही नहीं। उस समय थे भी छोटे, तो कहीं हमारी राय इत्यादि देने की कोई बात ही नहीं थी।

एक दिन पाठक साहेब भगवा रंग के पांच-सात सॅम्पल लेकर आए और मुझसे बोले – *चलो, बापा के पास जाना है।*

मैंने पूछा – *क्यों?*

तो उन्होंने बताया – *बाबूभाई (पप्पाजी) ने कहा है कि बापा से यह पूछ लेना।*

मैंने कहा – *क्या?*

तब उन्होंने बताया – *ये बहनों को जो दीक्षा देनी है, उनके कपड़े का शेड बापा से पसंद करवाना है।*

'इतना विरोध होगा' – उस समय तो इस बात का मुझे कुछ ख्याल ही नहीं था। मैं उनके साथ बापा के पास गया। उन्होंने बापा से कहा – *बापा, ये बहनों को जो दीक्षा लेनी है, उनके कपड़े के ये शेड्स हैं; बाबूभाई ने कहा है कि बापा से* ***अकेले में*** *पूछ लेना।*

मेरे कानों में यह शब्द पड़ गया – **'अकेले में'।** मतलब यह सब बापा, काकाजी और पप्पाजी की अंदरूनी योजना थी। मेरे लिए यह बात एकदम साफ़ हो गई न! बापा ने तब चार-पांच कलर्स में से एक पर उंगली रखी कि 'यह रखना'। तो कन्फर्म हो गया कि कौन-से शेड का कपड़ा लेना है – यहां तक भी इन्होंने अगर बापा से पूछा है, तो साफ़ है कि इतनी सारी एक्टीवीटी के बारे में बापा का ही लीड था और उनकी कन्सेन्ट से ही सब कुछ हो रहा था। तो यह मेरे लिए एक फेवर था। अगर यह बात मेरी जानकारी में नहीं आती, तो शायद मेरे दिमाग़ में यह कीड़ा रह जाता।

भले ही काकाजी के प्रति हमें लगाव-महिमा सब कुछ था, पर एक्च्युअली हम साधु हुए थे, तो जीवन बापा के लिए ही था। अगर बापा की मर्जी के विरुद्ध कोई काम हो – तो फिर वो चाहे काकाजी का हो या पप्पाजी का हो – उसमें हमारा इन्वॉल्वमेंट या इन्ट्रेस्ट हो ही नहीं सकता।

... दुःख तो मन के कॉन्फ्लीक्ट से ही बनता है। सच क्या? झूठ क्या? उसके बजाय, यदि **किसी को सुखी होना है, तो ऐसे संत के साथ हम एक ऐसा दृढ़ संबंध करें कि वे हर पल हमारी रक्षा करते**

रहें। गुजराती में एक कहावत है–'पहेलुं सुख ते जाते नर्या।' मतलब, खुद स्वस्थ रहना, सबसे पहला सुख है। अगर हमारी ही तबियत अच्छी न हो – तबियत फिर फ़िज़ीकली गिनो, मेंटली गिनो, किसी भी तरह की गिनो – तो दूसरों की तबियत क्या अच्छी करेंगे? **माया का प्रपंच हरेक की तबियत बिगाड़ देता है।** माया किसी भी प्रकार की हो। माया का मतलब लेडीज़ ही नहीं हैं। माया कई प्रकार की होती है। भीतर में भी माया भरी हुई है। जनरली शास्त्रों में माया को दुःखदायी बताया है। पर, महाराज ने कह दिया कि भगवान के भगत के लिए माया दुःखदायी नहीं है... **काकाजी कहते – *स्वामिनारायण एक पहला अवतार आया, जिन्होंने कहा कि भगवान के भगत के लिए माया दुःखदायी नहीं; सुखदायी नहीं, 'परम सुखदायी' है!*** यह एक बड़ा डॅरिंग स्टेटमेंट है। भगत यानि जो मानवस्वरूप में विचर रहे भगवान के तत्त्व को पहचाने वो भगत! भगत की यह व्याख्या भी भगवान स्वामिनारायण ने ही दी! पूजा-पाठ, दान-धर्म करे, तीर्थाटन करे, व्रत करे, चंदा दे या सत्कर्म भी किया करे, उसे भगत नहीं कहा, लेकिन **मानवस्वरूप में विचरते पारमेश्वरी तत्त्व को जो पहचाने वो – 'भगत'!** चाहे फिर वो कैसा भी हो। मैं कई बार कहता हूँ कि हनुमान को सब 'रामभक्त' हनुमान कहते हैं। भगत क्यों कहते हैं? क्योंकि – मानवस्वरूप में विचरण करते पुरुषोत्तम नारायण को हनुमान ने पहचाना। बाकी, जंगल में तो दूसरे कितने ही ऋषि-मुनि होंगे, लेकिन हनुमान ने जैसे पहचाना वैसा और किसी ने नहीं पहचाना। सो, हनुमान भगत की कॅटेगरी में आए और आज हम उनका पूजन करते हैं, भले ही वे हैं वानर! असल में तो हमें शर्मिन्दा होना चाहिए कि मानव होते हुए हमें चार पांव वाले बंदर का मंदिर में पूजन करना पड़ता है। इन बातों का तात्पर्य यह है कि **अपने जीवन में हम भी, मानव स्वरूप में विचर रहे पारमेश्वरी तत्त्व को पहचान कर, उनके होकर जीएं...**

संतों में – गुणातीतभाव को पाए हुए संत एक अलग ही चीज है। किसी संत की हम इनके साथ कम्पेरिज़न नहीं कर सकते।

एक सेमीनार में प्रश्न उठा – *हिन्दुस्तान की कौन-सी नदी का पानी टॉप?*

एक व्यक्ति बोला – *यमुनाजी का।*

वहां एक भाई साहब बैठे थे, वे भी अक्लवाले थे, तो उन्होंने पूछा – *गंगा का नहीं?*

इस पर उस व्यक्ति ने बताया – *गंगा का जल, पानी की कॅटेगरी में है ही नहीं, वह तो अमृत है।*

पानी के बारे में पूछा जाए, तो यमुनाजी का टॉप। इसी तरह **गुणातीतभाव को पाए हुए संत के विषय में हम भले बोलेंगे 'संत', लेकिन वो संत नहीं, भगवान का स्वरूप हैं। यहां धरती पर भगवान की टोटल पावर्स लिए हुए उनका रिप्रेज़न्टेटिव हैं...** मैं जो इस बार के दीवाली कार्ड के द्वारा समझाने जा रहा था, वो यह बात है।

ऐसे गुणातीतभाव को पाए हुए संत की गोद में हमें बैठने का अवसर मिला है, इस बात से तो हमारी हर उलझन खत्म हो जाती है। लेकिन उनके कहे पर हमें ध्यान देना आवश्यक है। हम बातें सुनते हैं,

लेकिन या तो उनकी बातें हमारी समझ में नहीं आतीं या उनकी बातों का हमें भरोसा नहीं है कि ये जो बात करते हैं, वे ऐसी ही हैं। शास्त्रों की बातों का हम पर ज़्यादा प्रभाव पड़ा हुआ है। गुणातीतानंदस्वामी ने इस बात को ठीक ढंग से समझाया है।

किसी ने पूछा– *स्वामी, आप जो बातें कर रहे हैं या महाराज जो बातें करके गए, शास्त्रों में तो वो बातें मिलती ही नहीं हैं।*

स्वामी ने कह दिया – *यह अवतार ही शास्त्र लिखने के बाद हुआ है, तो फिर इनकी कही हुई बातें शास्त्रों में कहाँ से आएँगी ? शास्त्र इनसे पहले लिखे गए थे, महाराज बाद में आए हैं। इन्होंने सारी नई बातें हमारे सामने रखी हैं। कल्याण का मार्ग अलग ढंग से रखा हुआ है।*

कैसी नई बात ? हम युवक के रूप में ताड़देव जाते थे, तब **काकाजी कहते** थे –

महाराज यानि भगवान स्वामिनारायण की कोई सेवा करे, तो उसका फल मानो –'10 रुपया'। वही सेवा योगीजी महाराज की करो तो उसका फल –'100 रुपया'। और...

योगीजी महाराज के संबंध वाले भक्तों की करोगे तो उसका फल –'1000 रुपया', जबकि सेवा वही !

ऐसी बातें सुनने में मज़ा आता है और हम ख़ुश भी होते हैं; लेकिन जब ऐसे बरतना आता है, तब हम महाराज के इर्द-गिर्द ही घूमते हैं। साधु के या ऐसे अवतार के चहेते बनने की कोशिश करते हुए उनके इर्द-गिर्द घूमेंगे। महाराज ने पर्वतभाई को निमित्त बना कर एक बार जॅस्चर करके भी दिखाया था... मतलब यह था कि मेरे दिल में अगर स्थान लेना हो, तो मेरे प्रति जो भाव है वैसा ही तुम भक्तों के प्रति भाव रखो।

काकाजी कहते थे – ***भगवान के भक्तों में भगवान का भाव रखकर सेवा करना - यही स्वामिनारायण का 'पंचरात्र' है।***

आज नए साल के दिन कोई नई बात नहीं करनी। हम सभी इस रास्ते पर दौड़ रहे हैं। हरेक की इच्छा है कि काकाजी हमें जो देना चाहते थे, वह हम अब पकड़ लें। काकाजी कह दो, पप्पाजी कह दो या स्वामिजी भी! **आज दो साल से मैं सुनता आया हूँ कि वे यही कहते हैं–*दास का दास बनो, दास का दास बनो।*** मतलब सत्संगी के सत्संगी बनो... आजमा करके तो देखो। भगत गलत भी हो; लेकिन काकाजी कहते थे– *'सर्वोपरि स्वामिनारायण' हैं।* हम अगर इस बात को पकड़ कर महाराज को राजी करने के लिए उस भगत के संग रहेंगे, तो हमारे ख़ातिर उसका सारा तंत्र बदल कर महाराज हमारे फेवर में कर देंगे।

...तो आज यह बात लेकर जाना कि **भक्तों की रुचि में जितना अधिक रहेंगे, महाराज हमारी सारी रुचि सेटिस्फाई करेंगे और जिस सुख की हम कामना करते रहते हैं, वो हमें बिना प्रयास मिलता रहेगा।** सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

– प.पू. गुरुजी

✡✡✡

('बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' – प्रथम सोपान 12, 13, 14 अगस्त 2013, पेरिस)

भजन

(राग–सात अजूबे इस दुनिया में.....)

सात अजूबे इस दुनिया में, आठवीं आपकी जोड़ी
अक्षरधाम से योगीजी लेकर आए दिव्य ये जोड़ी-2 }
अद्वैत संबंध की मिसाल ये दिव्य बंधु की जोड़ी... } -2
ओ... हो...
अक्षरधाम से योगीजी लेकर आए दिव्य ये जोड़ी,
अद्वैत संबंध की मिसाल ये काका-पप्पा की जोड़ी...

(राग– बने चाहे दुश्मन ज़माना....)

योगी की ही मर्ज़ी, वो ही लक्ष्य तुम्हारा -2 }
भिन्न शैली मगर, एक निशान तुम्हारा, } -2
हुए धन्य हम, पा के संबंध तुम्हारा...
योगी की ही मर्ज़ी, वो ही लक्ष्य तुम्हारा
भिन्न शैली मगर, एक निशान तुम्हारा...

राम-लखन सा गुज़ारा, साथ में बचपन -2
धरा पर स्वर्ग लाना है, दोनों थे एकमन,
एक की वाणी सिंह गर्जन, एक का मौन वर्तन,
दोनों देख संबंध, करें चैतन्य का घड़न,
करें चैतन्य का घड़न,
दोनों ने अखंड, योगीजी को ही धारा,
हुए धन्य हम, पा के संबंध तुम्हारा...
योगी की ही मर्ज़ी, वो ही लक्ष्य तुम्हारा
भिन्न शैली मगर, एक निशान तुम्हारा...

दो पहलू मगर, सिक्का योगी का ये एक -2
गुणातीत पीढ़ी के बनाए वारिसदार अनेक,
52 से 72 तक का, सुनहरा समय जो,
लौटाएँ युग वो दोबारा, जीकर हम ऐसे एक, जीकर ऐसे एक!
योगी कबीला ही, दिव्य कुनबा हमारा...
हुए धन्य हम, पा के संबंध तुम्हारा...
योगी की ही मर्ज़ी, वो ही लक्ष्य तुम्हारा
भिन्न शैली मगर, एक निशान तुम्हारा...

दिव्य बंधुजोड़ी की शताब्दी एक हो मनाएँ -2
नए सिरे से हम सैद्धांतिक प्रसन्नता पाएँ...
पेरिस मंडल ने प्रथम सोपान का डंका बजा कर,
उन्हें राजी करने मुद्दे का जो कदम है उठाया,
वैसे हम उठाएँ...

ऐसा मौका सुनहरा, न मिलेगा दोबारा
हुए धन्य हम, पा के संबंध तुम्हारा
योगी की ही मर्ज़ी, वो ही लक्ष्य तुम्हारा
भिन्न शैली मगर, एक निशान तुम्हारा...

अक्षरधाम से योगीजी लेकर आए दिव्य ये जोड़ी,
अद्वैत संबंध की मिसाल ये दिव्य बंधु की जोड़ी...
सात अजूबे इस दुनिया में, आठवीं आपकी जोड़ी,
अद्वैत संबंध की मिसाल ये काका - पप्पा की जोड़ी।।

।। निमंत्रण ।।

आइए, गुणातीत समाज के आत्मीय मुक्तों...
इस बार प.पू. गुरुजी की 77वीं प्राकट्य तिथि का शुभ दिन
2 मार्च 2014, रविवार सायं 5:30 बजे से
प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों की निश्रा में ताड़देव मंदिर के परिसर में मनाएँ।

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 27.1.2014, सोमवार	–	एकादशी – व्रत
			ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की स्वधामगमन तिथि
(2)	दि. **3.2.'14, सोमवार**	–	**ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन,**
			श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर – दिल्ली का 20वाँ पाटोत्सव दिन
(3)	दि. 4.2.'14, मंगलवार	–	वसंतपंचमी, शिक्षापत्री जयंती,
			ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज का प्राकट्य दिन
(4)	दि. 10.2.'14, सोमवार	–	एकादशी – व्रत
(5)	दि. 15.2.'14, शनिवार	–	**प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी का प्राकट्य दिन**
(6)	दि. 26.2.'14, बुधवार	–	एकादशी – व्रत
(7)	**दि. 27.2.'14, गुरुवार**	–	**महाशिवरात्रि**, व्रत ***(ताड़देव मंदिर में सुबह 9:30 बजे 'लघुरुद्र')***
(8)	**दि. 2.3.'14, रविवार**	–	**प.पू. गुरुजी की 77वीं प्राकट्य तिथि का शुभ दिन,**
			ताड़देव मंदिर में प्राकट्योत्सव सायं 5:30 बजे से...
(9)	दि. 7.3.'14, शुक्रवार	–	**ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के स्वधामगमन दिन निमित्त**
			सायं 6:30 बजे ताड़देव मंदिर में अखंड परिक्रमा का शुभारंभ...
(10)	दि. 8.3.'14, शनिवार	–	**ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के स्वधामगमन दिन निमित्त करी**
			अखंड परिक्रमा की पूर्णाहुति सायं 6:30 बजे...
(11)	दि. 12.3.'14, बुधवार	–	एकादशी – व्रत
(12)	दि. **13.3.'14, गुरुवार**	–	**प.पू. गुरुजी का 77वां प्राकट्य दिन**

R.N.I. 28971/ 77 ***(Air Mail)***
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO** ***FOR*** **YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'*Taad-dev*', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052